Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 17

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

29 शअबान 1441 हिजरी कमरी 23 शहादत 1399 हिजरी शमसी 23 अप्रैल 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

مَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ (अल- अनफ़ाल 34)

इस लिए अगर तुम चाहते हो कि इस अज़ाब इलाही से तुम सुरक्षित रहो, तो इस्तिग़फ़ार बहुत अधिक पढ़ो।

मैं तुम्हें ये समझाना चाहता हों कि जो लोग बला के नाज़ल होने से पहले दुआ करते हैं और इस्तिग़फ़ार करते और सदक़े देते हैं। अल्लाह तआला उन पर रहम करता है और अज़ाब इलाही से उन को बचा लेता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इस्तिग़फ़ार, अज़ाबे इलाही और मुसीबतों के लिए ढाल का काम देता है।

ख़ुद प्लेग की बीमारी बहुत बड़ा अज़ाब है। दूसरा क़ानून इस पर सख़्त है। जो दूसरा अज़ाब है और मर्ज़ से भी बढ़ कर है। औरत हो या बच्चा हो अलग किया जाता है और घर को ख़ाली करने का हुक्म दिया जाता है। इस बीमारी और इस के क़ानून पर विचार करके मेरे दिल में एक दर्द पैदा हुआ और मैंने तहज्जुद में इस के बारे में दुआ की तो इलहाम हुआ اِنَّ اللّٰہَ لَا یُغَیِّرُ مَا بِقَوۡمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوۡا مَا بِاَنۡفُسِہِمۡ अब विचार होता है कि वह इलहाम जो हुआ था कि

"कौन कह सकता है हे बिजली आसमान से मत गिर"

शायद इसी के बारे में हो।

मैं तुम्हें ये समझाना चाहता हों कि जो लोग बला के नाज़ल होने से पहले दुआ करते हैं और इस्तिग़फ़ार करते और सदक़े देते हैं। अल्लाह तआला उन पर रहम करता है और अज़ाब इलाही से उन को बचा लेता है। मेरी इन बातों को क़िस्सा के तौर पर ना सुनो। मैं अल्लाह के लिए नसीहत करता हुआ कहता हूँ अपने हालात पर विचार करो। और आप भी और अपने दोस्तों को भी दुआ में लग जाने के लिए कहो। इस्तिग़फ़ार, अज़ाब इलाही और कठिन मुसीबतों के लिए ढाल का काम देता है। क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला है:

مَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ (अल- अनफ़ाल 34)

इस लिए अगर तुम चाहते हो कि इस अज़ाब इलाही से तुम सुरक्षित रहो, तो इस्तिग़फ़ार बहुत अधिक पढ़ो।

गर्वनमैंट को अधिकार होगा कि पीड़ित व्यक्ति को अलग रखा जाए। मानो वह लोग जो अलग किए जाएंगे क़ब्रों में ही होंगे। अमीर ग़रीब , मर्द तथा औरत , बूढ़े, जवान का कोई लिहाज़ न किया जाएगा। इसलिए अगर ख़ुदा न चाहे अगर किसी ऐसे स्थान ताऊन फैले जहां तुम में से कोई हो तो मैं तुम्हें हिदायत करता हूँ कि गर्वनमैंट के क़ानून की सबसे पहले इताअत करने वाले तुम हो।

प्राय स्थानों में सुना गया है कि पुलिस वालों से मुक़ाबला हुआ। मेरे निकट गर्वनमेंट के क़ानूनों के ख़िलाफ़ करना बग़ावत है, जो ख़तरनाक जुर्म है। हाँ गर्वनमैंट का बेशक यह कर्तव्य है कि वह ऐसे अफसर निर्धारित करे जो अच्छे आचरण, नर्म मिज़ाज और देश के रस्मो रिवाज और धार्मिक पाबंदियों से परिचित हों। अत: तुम ख़ुद उन क़ानूनों पर अनुकरण करो और अपने दोस्तों और पड़ासियों को इन क़ानूनों के लाभ से आगाह करो। मैं बार-बार कहता हूँ कि दुआओं का समय यही है मालूम होता है इस महामारी ने पंजाब का रुख़ कर लिया है, इसलिए ज़रूरी है कि हर एक सचेत और जागरुक हो कर दुआ करे और तौबा करे। क़ुरआन शरीफ़ की इच्छा यह है कि जब अज़ाब सिर पर आ पड़े फिर तौबा अज़ाब से नहीं छुड़ा सकती।

अज़ाब इलाही से बचने के तरीक़े

इसलिए इस से पहले कि अज़ाब इलाही आकर तौबा का दरवाज़ा बंद कर दे, तौबा करो। जब कि दुनिया के क़ानून से इस क़दर डर पैदा होता है तो क्या कारण है कि ख़ुदा ताला के क़ानून से न डरें। जब बला सिर पर आ पड़े तो फिर उस का मज़ा चखना ही पड़ता है। चाहिए कि हर एक व्यक्ति तहज्जुद में उठने की कोशिश करे और पाँच वक़्त की नमाज़ों में भी क़नूत मिलाए। हर एक किस्म की ख़ुदा को नाराज़ करने वाली बातों से तौबा करे। तौबा से यह अभिप्राय है कि इन समस्त बुराइयों और ख़ुदा की नारज़ागी के कारणों को छोड़कर एक सच्ची तबदीली करें और आगे क़दम रखें और तक़्वा धारण करें। अख़लाक़ की तहज़ीब करें इस में भी ख़ुदा का रहम होता है। इन्सानी आदतों को ठीक करें। ग़ज़ब न हो। विनय और विनम्रता उस का स्थान ले। आचरण की दुरुस्ती के साथ अपने सामर्थ्य के अनुसार सदक़ों का देना भी धारण करो।

يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا (अद्दहर:9)

शेष पृष्ठ 12 पर

आवश्यक सूचना

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ आपके पत्र देख रहे हैं और आप के लिए दुआएं कर रहे हैं।

उन समस्त पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए सूचना है कि यह ऐलान किया जाता है जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में ख़त लिखते हैं कि

उनके समस्त पत्र पहले की तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में पेश हो रहे हैं। परन्तु कोरोना वाइरस के कारण से आजकल जो अवस्था है उनमें पत्रों के उत्तर लिखने वालों की कमी की गई है इस लिए इन सब पत्रों का अलग अलग उत्तर भिजवाना संभव नहीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ आपके पत्र देख कर आप के लिए दुआएं कर रहे हैं। अल्लाह तआला फ़ज़ल और रहम फ़रमाए। इस महामारी और दूसरी कठिनाइयों से प्रत्येक को बचाए। सबको अपनी सुरक्षा में रखे और हमेशा उस के प्यार की नज़रें आप पर पड़ती रहें ।

(मुनीर अहमद जावेद , प्राइवेट सैक्रेटरी)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का जर्मनी का सफर, जुलाई 2019 ई (अन्तिम भाग-10)

जब मैंने अपने पिता के साथ इस जलसा में शामिल का इरादा किया तो ज़हन में था कि यह एक नए तरीके का अनुभव होगा लेकिन जब शामिल हुई तो महसूस हुआ कि यह तो निहायत ख़ूबसूरत और गुणों पर आधारित इन्सानों का एक ऐसा जलसा है जिसने मुझ पर एक ख़ास भावनात्मक प्रभाव डाला है

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला हाल में तशरीफ़ लाते तो नारों का बुलंद हो जाना और इसी तरह हुज़ूर का फ़रमाना कि बैठ जाएं और इतने बड़ी भाड़ का फ़ौरन बैठ जाना , यह दुनिया में कहीं देखने को नहीं मिलता।

हुज़ूर अनवर के ख़िताब हर किस्म के ज्ञान से सुसज्जित थे और इन्सान के ध्यान को खींचते थे,अगले साल के जलसा में शामिल होने के लिए बेक़रार हूँ।

ख़लीफ़तुल मसीह से मिलने के बाद ऐसा महसूस होता है कि जैसे ज़िन्दगी सम्पूर्ण और कामयाब हो गई है,बैअत करते वक़्त मुझे ऐसा लग रहा था कि मानो में ख़ुदा के क़रीब हो गया हूँ।

जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने वाले मेहमानों के ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं।

दुआओं से , इख़लास से, ईमान में मज़बूती से अपना नमूना क़ायम करें,उनकी अच्छी तर्बीयत करें और उनको ट्रेनिंग दें, इन नए आने वालों को एम टी ए से जोड़ें, कम से कम मेरा ख़ुत्बा ज़रूर सुनें

अफ़्रीक़ा के मुबल्लग़ीन तथा मुअल्लेमीन की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात , हुज़ूर अनवर की नौ मुबाईन की तर्बीयत के बारे में सुनहरी नसीहतें।

फ़्रंकफ़र्ट से लन्दन के लिए रवाना हुए

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मेसेडोनिया के वफ़द की हुज़ूर से मुलाक़ात

इस के बाद देश मेसेडोनिया से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। मेसेडोनिया से अहमदी , ग़ैर अहमदी और ईसाई लोगों पर आधारित 70 लोगों ने जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इस वफ़द में 8 पत्रकार भी शामिल थे जिन में दो इलाक़ाई TV और अन्य 6 नैशनल टीवी या अन्य न्यूज़ एजैंसी से सम्बन्धित थे। उन पत्रकारों ने जुम्अ: वाले दिन हुज़ूर अनवर की प्रैस कान्फ्रैंस में शामिल की और हुज़ूर अनवर से सवाल पूछे। इसके इलावा जलसा के दौरान कुछ इंटरव्यू किए और रिकार्डिंग की

पत्रकारों के अतिरिक्त वफ़द में 15 ईसाई दोस्त,23 ग़ैर अहमदी मुसलमान और 24 अहमदी मुसलमान शामिल थे। कई मेहमान पहली बार पधारे।

ग़ैर जमाअत मेहमानों में से पाँच ने बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया। प्राय ने जलसा सालाना में शामिल होने , प्रबन्ध , तक़ारीर, रिहायश, खाना इत्यादि की बहुत प्रशंसा की। मेहमानों को विशेषत: हुज़ूर अनवर के ख़त्बे बहुत पसंद आए और उन्होंने इस बात का इज़हार किया कि हुज़ूर बहुत सादा और आम समझ में आने वाली भाषा में ख़िताब फ़रमाते हैं जिसका दिलों पर प्रभाव होता है

हुज़ूर अनवर ने पूछने फ़रमाया कि वह नौजवान जो नज़म पढ़ता था इस साल नहीं आया? इस पर वहां के मुरब्बी सिलसिला ने निवेदन किया कि इस को छुट्टी नहीं मिल सकी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने मुलाक़ात को दौरान एक बच्चे की आमीन करवाई और इस से क़ुरआन करीम की एक आयत सुनी और करवाई।

एक दोस्त रमज़ान साहिब खड़े हुए और उन्होंने बताया कि में 1993 ई से अहमदी हूँ। मैंने कोई सवाल नहीं करना। मैं सिर्फ हुज़ूर अनवर को सलाम पहुंचाने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि मैंने पिछले साल खाने के बारे में से बात की थी। इस साल खाना बहुत अच्छा था। बलक़ान के लोगों के लिहाज़ से भी खाना ठीक था।

वफ़द की एक औरत अलीगज़ांडरा दूनीवा' (Aleksandra Doneva) साहिबा जलसा सालाना जर्मनी में पहली बार शामिल हुईं। उन्होंने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा घर वालों के बिना घर का क्या विचार हो सकता है? क्या आचरण के बिना इन्सानियत का विचार हो सकता है। इन्सान की हक़ीक़त मज़हब और अक़ीदा के बिना नहीं है और मुहब्बत के बिना इन्सानियत का क्या विचार हो सकता है। इन्सान की रूह की पवित्रता सिर्फ़ अमन में रहने और अमन को फैलाने से प्राप्त हो सकती है। इसी तरह रूह की पवित्रता रवादारी आपसी इज़्ज़त तथा सम्मान में छुपी है। इन्सान के लिए ज़रूरी है कि वह ख़ुदा पर यक़ीन रखे और ज़मीन पर भविष्य को बेहतर बनाए। यह एक ऐसा तरीक़ा है जिससे हम इन्सानियत की सुरक्षा कर सकते हैं। जमाअत अहमदिया ये समस्त मामले सरअंजाम दे रही है। अहमदी अमन को फैलाते हैं और अमन की शिक्षा देते हैं। वे आचरण को स्थापित कर रहे हैं और कोशिश कर रहे हैं कि मानव जाति यह समस्त बातें करे। अहमदियत लोगों को एक जगह इकट्ठा कर रही है। उनको इबादत की आदत लगाई है। अहमदियत यह चाहती है कि लोग रूहानियत में दृद्धि करने वाले हूँ। उनमें एकता स्थापित हो वह ख़ुदा के निकट हों। इस साल जलसा सालाना पर मैंने बहुत अधिक अच्छे लोग देखे। मुस्कुराते चेहरों के साथ जो हमें बहुत इज़्ज़त दे रहे थे। उनको इस बात का यक़ीन है कि अच्छे आचरण के साथ अच्छी ज़िन्दगी जी जा सकती है।

मैं शुक्रगुज़ारी के भावनाओं के साथ इस बात की गवाही देती हूँ कि मैंने ऐसे लोगों को देखा है जिनका ख़ुदा पर यक़ीन और ईमान बहुत मज़बूत है। मुझे उम्मीद है कि आप यह नेक काम जारी रखेंगे। इस सिलसिला में अधिक ध्यान और मुहब्बत जारी रखेंगे और फिर एक वक़्त आएगा और लोगों को इस बात का इल्म होगा कि ज़िन्दगी की वास्तविकता और value क्या है

मुहब्बत के बिना इन्सान कुछ नहीं। यह एक ऐसा कमी है जिसकी कमी कभी पूरी नहीं हो सकती। उम्मीद करती हूँ कि आप आगे बढ़ेंगे और मेहनत के साथ इस ख़ाली स्थान को भरेंगे करेंगे और मज़हबी इक़दार के प्रकाशन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेंगे।

मेसीडोनियन वफ़द में शामिल एक टीवी के पत्रकार ज़ोरांचव ज़ोरसकी (Zoranco Zorinski) साहिब दूसरी बार जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुए थे। उन्होंने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा: जलसा में शामिल होना मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान है। जलसा के प्रबन्ध बहुत उच्च थे। मैं पिछले साल भी यहां आया हूँ। मेरे विचार में जलसा के प्रबन्ध पिछले साल की तुलना में अधिक अच्छे थे। मेरा कुछ नए दोस्तों से परिचय प्राप्त हुआ मैं विशेषत: हुज़ूर के ख़िताबों

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"दुनिया में एक नज़ीर (डराने वाला) आया पर दुनिया ने उस को स्वीकार न किया लेकिन ख़ुदा इसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार हमलों से इस की सच्चाई ज़ाहिर कर देगा।"

"वह ख़ुदा जो ज़मीन तथा आसमान का ख़ुदा है उसने यह मेरे पर प्रकट किया है कि तो हिंदुओं के लिए कृष्ण और मुस्लमानों और ईसाईयों के लिए मसीह मौऊद है।"

"अगर मेरे साथ झगड़ा है तो इस में हद से न बढ़ो और वह काम न करो जो इस्लाम धर्म को हानि पहुंचाए।"

"वह काम जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे मामूर फ़रमाया है वह यह है कि ख़ुदा में और इस की मख़लूक़ के रिश्ता में जो दूरी हो गई है इस को दूर कर के मुहब्बत और इख़लास के सम्बन्ध को दोबारा स्थापित करूँ और सच्चाई के इज़हार से मज़हबी जंगों का ख़ात्मा कर के सुलह की नींव डालूं। और वह धार्मिक सच्चाईयां जो दुनिया की आँख से छुप गई हैं उनको प्रकट कर दूं

और वह रूहानियत जो नफ़सानी अन्धेरों के नीचे दब गई है इस का नमूना दिखाऊँ और ख़ुदा की ताक़तें जो इन्सान के अंदर दाख़िल हो कर ध्यान या दुआ के माध्यम से प्रकट होती हैं आदर्श के द्वारा से न केवल कथन से उनकी कैफ़ीयत वर्णन करूँ और सबसे अधिक यह कि वह ख़ालिस और चमकती हुई तौहीद जो हर एक किस्म की शिर्क की मिलावट से पवित्र है जो अब समाप्त हो चुकी है इस का दोबारा क़ौम में स्थायी पौधा लगा दूं।"

"मैं देखता हूँ कि जब से ख़ुदा ने मुझे दुनिया में मामूर कर के भेजा है उसी वक़्त से दुनिया में एक महान इन्क़िलाब हो रहा है।"

"जब लोग ख़ुदा का रास्ता भूल जाते हैं और तौहीद और सच्चाई को छोड़ देते हैं। तो ख़ुदा तआला अपनी तरफ़ से किसी बंदा को सम्पूर्ण बसीरत प्रदान फ़र्मा कर और अपने कलाम और इलहाम से समन्वित कर के मानव जाति की हिदायत के लिए भेजता है।"

इस वाइरस ने दुनिया को इस बात पर सोचने पर मजबूर कर दिया है कि ख़ुदा की तरफ़ रुजू करें लेकिन वास्तविक ख़ुदा और ज़िन्दा ख़ुदा तो सिर्फ इस्लाम का ख़ुदा है जिसने अपनी तरफ़ आने वालों को रास्ता दिखाने का फ़रमाया है।

एम टी ए पर मसीह मौऊद दिवस की तुलना से प्रसारित होने वाले प्रोग्रामों से लाभ उठाने की नसीहत।

कोरोना वाइरस के लिए सावधानी धारण करने, इस मुश्किल समय में दुनिया को इस्लाम से परिचित करवाने के लिए प्रभावकारी तब्लीग़ी काम करने और बीमारी में पीड़ित हो जाने वाले लोगों के लिए दुआएं करने की नसीहत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 मार्च 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

तीन दिन के बाद 23 मार्च है। ये वे दिन है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बैअत का आरम्भ फ़रमाया था और इस तरह नियमित जमाअत अहमदिया की भी बुनियाद पड़ी। जमाअत में यह दिन "यौमे मसीह मौऊद" के नाम से मनाया जाता है। इस दिन की तुलना से जलसे भी होते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा और आप के आने के मक़सद के बारे में भी बताया जाता है। इसलिए इस हवाले से यद्यपि अभी तीन दिन बाक़ी हैं लेकिन अगला जुम्अः फिर आगे चला जाएगा। इसलिए मैं आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में आप के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूँगा।

इस साल शायद अक्सर देशों और स्थानों में जो आजकल वाइरस की महामारी फैली हुई है इस के कारण से जलसे न हो सकें इसलिए मेरे ख़ुत्बे के अतिरिक्त एम टी ए पर भी इस बारे में प्रोग्राम पेश होंगे। उन्हें हर अहमदी को अपने बच्चों के साथ अपने घर में सुनने की कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आप ही के काम को और आप के धर्म को दुनिया में फैलाने के लिए मबऊस किए गए थे अतः आप एक स्थान पर फरमाते हैं :

"मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजता हूँ कि आप ही के लिए अल्लाह तआला ने इस सिलसिला को स्थापित किया है और आप ही के फ़ैज़ान और बरकतों का परिणाम है जो ये सहायताएं हो रही हैं। "आप फ़रमाते हैं "मैं खोल कर कहता हूँ और यही मेरा अक़ीदा और मज़हब है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण और नक़शे क़दम पर चलने के बिना कोई इन्सान कोई रुहानी फ़ैज़ और फ़ज़ल प्राप्त नहीं सकता।"

(लैक्चर लुधियाना, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 267)

आप ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जो रुहानी फ़ैज़ पाया उस के कारण से अल्लाह तआला ने आप को दुनिया के सुधार के लिए भेजा। इस्लाम की शान तथा वैभव को दोबारा दुनिया में स्थापित करने के लिए भेजा। अतः एक स्थान पर आप फरमाते हैं।

"وَاَرْسَلَنِیْ رَبِّیْ لِاِصْلَاحِ خَلْقِہٖ" कि "और ख़ुदा ने मुझे भेजा है कि ताकि मैं मख़लूक़ का सुधार करूँ।"

(एजाज़ अहमदी ज़मीमा नुज़ूलुल मसीह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 178)

फिर अपने प्रादुर्भव के बारे में और अधिक फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि

"मैं इस को बार-बार वर्णन करूँगा और इस के प्रकटन से मैं रुक नहीं सकता कि मैं वही हूँ जो समय पर मानव जाति के सुधार के लिए भेजा गया ताकि धर्म को

ताज़ा तौर पर दिलों में क़ायम कर दिया जाए। मैं इस तरह भेजा गया हूँ जिस तरह से वह शख़्स बाद कलीमुल्लाह मर्द ख़ुदा के भेजा गया था जिसकी रूह हैरोडीस के हुकूमत के समय में बहुत तकलीफों के बाद आसमान की तरफ़ उठाई गई।"

(फ़तह इस्लाम, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 3 पृष्ठ 7-8)

फिर इस बात का ऐलान फ़रमाते हुए कि जिस मसीह मौऊद के आने की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेशगोई फ़रमाई थी वह अपने समय पर प्रकट हुआ। आप फरमाते हैं।

"अत: अब हे भाइयो! ख़ुदा के लिए धक्के और ज़बरदस्ती से काम न लो। आवश्यक था कि मैं ऐसी बातें प्रस्तुत करता जिसके समझने में तुम्हें ग़लती लगी हुई थी। यदि तुम पहले ही सद्भार्ग पर होते तो मेरे आने की आवश्यकता ही क्या थी। मैं कह चुका हूँ कि मैं इस उम्मत के सुधार के लिए इब्ने मरयम होकर आया हूँ और उसी प्रकार आया हूं जिस प्रकार हज़रत मसीह इब्ने मरयम यहूदियों के सुधार के लिए आए थे। मैं इसी कारण तो उनका मसील (समरूप)हूँ कि मुझे वही और उसी प्रकार का कार्य सपुर्द हुआ है जैसा कि उनके सुपुर्द हुआ था। मसीह ने अवतरित होकर यहूदियों की बहुत सी ग़लतियों और निराधार बातों से मुक्ति दी थी। इन के अतिरिक्त एक यह भी था कि यहूदी लोग एलिया नबी के संसार में पुनरागमन की ऐसी ही आशा बांधे बैठे थे जैसे आजकल मुसलमान ख़ुदा के रसूल मसीह इब्ने मरयम के पुनरागमन की आशा बांधे बैठे हैं। अत: मसीह ने यह कह कर कि एलिया अब आकाश से उतर नहीं सकता ज़करिया का बेटा यह्या एलिया है जिसने स्वीकार करना है करे। उस पुरानी ग़लती को दूर किया और यहूदियों के मुख से स्वयं को नास्तिक और किताबों से विमुख कहलाया, परन्तु जो सत्य था वह प्रकट कर दिया। यही हाल उस के मसील का भी हुआ और हज़रत मसीह की भांति उसे भी नास्तिक का सम्बोधन दिया गया। क्या यह उच्च स्तर की समरूपता नहीं।"

(इज़ाला औहाम भाग 2, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 3 पृष्ठ 394)

और सिर्फ मुसलमानों के लिए ही नहीं बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हर क़ौम और मज़हब को अपनी बिअसत की एहमीयत बताई है। चुनांचे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि

"यह भी स्पष्ट हो कि मेरा इस युग में ख़ुदा तआला की तरफ़ से आना केवल मुसलमानों के सुधार के लिए ही नहीं है बल्कि मुसलमानों और हिंदुओं और ईसाइयों तीनों क़ौमों का सुधार के लिए है। और जैसा कि ख़ुदा ने मुझे मुसलमानों और ईसाइयों के लिए मसीह मौऊद कर के भेजा है ऐसा ही में हिंदुओं के लिए बतौर अवतार के हूँ और मैं बीस वर्ष के समय से या कुछ अधिक वर्षों से इस बात को प्रसिद्ध दे रहा हूँ कि मैं इन गुनाहों के दूर करने के लिए जिन से ज़मीन भर गई है जैसा कि मसीह इब्ने मरियम के रूप में हूँ ऐसा ही राजा कृष्ण के रंग में भी हूँ जो हिंदू मज़हब के समस्त अवतारों में से एक बड़ा अवतार था। या इस तरह कहना चाहिए कि रुहानी हक़ीक़त की दृष्टि से मैं वही हूँ। यह मेरे विचार और कल्पना से नहीं है बल्कि वह ख़ुदा जो ज़मीन तथा आसमान का ख़ुदा है उसने यह मेरे पर प्रकट किया है। और न एक बार बल्कि कई बार मुझे बतलाया है कि तू हिंदुओं के लिए कृष्ण और मुसलमानों और ईसाइयों के लिए मसीह मौऊद है। मैं जानता हूँ कि अज्ञान मुसलमान इस को सुनकर शीघ्रता से यह कहेंगे कि एक काफ़िर का नाम अपने पर लेकर कुफ़्र को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है। लेकिन यह ख़ुदा की वह्य है जिसके प्रकटन के बिना मैं रह नहीं सकता और आज यह पहला दिन है कि ऐसी बड़ी भीड़ में इस बात को मैं पेश करता हूँ क्योंकि जो लोग ख़ुदा की तरफ़ से होते हैं वे किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते।"

(लैक्चर सियालकोट, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 228)

यह आप ने लैक्चर सियालकोट में फ़रमाया जहां आप ने यह ख़िताब ,यह लैक्चर मुसलमानों और हिन्दुओं के एक बहुत बड़ी भीड़ में था।

फिर अपने प्रादुर्भव का महत्व वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं

"इन्सान जो कुछ अल्लाह तआला के हुक्म का विरोध करता है वे सब गुनाह का कारण हो जाता है। एक छोटा सिपाही सरकार की तरफ़ से कोई परवाना लेकर आता है तो इस की बात न मानने वाला मुजरिम क़रार दिया जाता है और सज़ा पाता है। मजाज़ी हुक्काम की यह अवस्था है तो सब से बड़े हाकिम की तरफ़ से आने वाले का अपमान और बेक़दरी करना अल्लाह तआला के हुक्म को तोड़ने वाली बात है। ख़ुदा तआला ग़ैरत रखता है। उसने मस्लिहत के अनुसार ठीक ज़रूरत के समय बिगड़ी हुई सदी के सिर पर एक आदमी भेजा ताकि वे लोगों को हिदायत की तरफ़ बुलाए। इस के समस्त उपदेशों को पांव के नीचे कुचलना एक बड़ा गुनाह है।"

फिर आप फ़रमाते हैं कि "..... इन्सान की अक़्ल ख़ुदा तआला की मस्लिहत से नहीं मिल सकती। आदमी क्या चीज़ है जो अल्लाह तआला की मस्लहत से बढ़कर समझ रखने का दावा करे। ख़ुदा तआला की मस्लिहत उस वक़्त स्पष्ट और प्रकाशित है।" आप फ़रमाते हैं कि "इस्लाम में से पहले एक शख़्स भी मुर्तद हो जाता था" अपने ज़माने की बात फ़र्मा रहे हैं "तो एक शोर मच जाता था। अब इस्लाम को ऐसा पांव के नीचे कुचला गया है कि एक लाख मुर्तद मौजूद है।" फिर आप फ़रमाते हैं कि "इस्लाम जैसे पवित्र मज़हब पर इतने हमले किए गए हैं कि हज़ारों लाखों किताबें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियों से भरी हुई प्रकाशित की जाती हैं। कई रिसाले कई करोड़ तक छपते हैं। इस्लाम के विरुद्ध जो कुछ प्रकाशित होता है अगर सब को एक जगह जमा किया जाए तो एक बड़ा पहाड़ बनता है। मुसलमानों की यह अवस्था है कि मानो उनमें जान ही नहीं और सब के सब मर ही गए हैं। इस वक़्त अगर ख़ुदा तआला भी ख़ामोश रहे तो फिर क्या हाल होगा। ख़ुदा का एक हमला इन्सान के हज़ार हमला से बढ़कर है और वह ऐसा है कि इस से धर्म का बोल-बाला हो जाएगा। ईसाईयों ने उन्नीस सौ साल से शोर मचा रखा है कि ईसा ख़ुदा है और उनका धर्म अब तक बढ़ता चला गया और मुसलमान उनको और भी मदद दे रहे हैं। ईसाईयों के हाथ में बड़ा हथियार यही है कि मसीह ज़िन्दा है और तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहो वसल्लम) फ़ौत हो गए।" फिर आप फ़रमाते हैं कि "लाहौर में लार्ड बिशप ने एक भारी भीड़ में यही बात पेश की। कोई मुसलमान उस का जवाब न दे सका मगर हमारी जमाअत में से मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब जो यह मौजूद हैं, उठे और उन्होंने क़ुरआन शरीफ़, हदीस, तारीख़, इंजील इत्यादि से साबित किया कि हज़रत ईसा वफात पा चुके और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िन्दा हैं क्योंकि आप से फ़ैज़ हासिल कर के करामत और चमत्कार दिखाने वाले हमेशा मौजूद रहे। तब उस का जवाब वह कुछ न दे सका।" आप फ़रमाते हैं कि "..... मैंने एक बार लुधियाना में ईसाईयों को इश्तिहार दिया था कि तुम्हारा हमारा बहुत मतभेद नहीं। थोड़ी सी बात है यह कि तुम स्वीकार कर लो के ईसा फ़ौत हो गए और आसमान पर नहीं गए। तुम्हारा इस में क्या नुकसान है? इस पर वे बहुत झुँझलाए और कहने लगे कि अगर हम यह मान लें कि ईसा मर गया और आसमान पर नहीं गया तो आज दुनिया में एक भी ईसाई नहीं रहता।"

फ़रमाया कि "देखो ख़ुदा तआला अलीम(बहुत जानने वाला) तथा हकीम है। उसने ऐसा पहलू धारण किया है जिससे दुश्मन तबाह हो जाए। मुस्लमान इस मामला में क्यों अड़ते हैं। क्या ईस आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अफ़ज़ल था? अगर मेरे साथ झगड़ा है तो इस में सीमा से न बढ़ो और वह काम न करो जो इस्लाम धर्म को नुक़्सान पहुंचाए। ख़द तआला त्रुटि वाला पहलू धारण नहीं करता और सिवाए इस पहलू के तुम कसरे सलीब नहीं कर सकते।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 174-175)

फिर एक अवसर पर हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि

"वह कार्य जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे मामूर किया है वह यह है कि ख़ुदा में और उसकी प्रजा के रिश्ते में जो मलिनता आ गयी है उसे दूर करके प्रेम और निकटता के संबंध को दोबारा स्थापित करूं और सच्चाई की अभिव्यक्ति से धार्मिक युद्धों को समाप्त करके सुलह की बुनियाद डालूँ। और वे धार्मिक सच्चाइयां जो संसार की आंख से छुप गयी हैं उनको प्रकट करूँ और वह रूहानियत जो कामवासना सम्बम्धी अंधकारों के नीचे दब गयी हैं उसका नमूना दिखाऊँ और ख़ुदा की शक्तियां जो मनुष्य के अन्दर प्रवेश करके ध्यान या दुआ के द्वारा प्रकट होती हैं व्यावहारिक रूप से न केवल कथन के द्वारा उनका हाल वर्णन करना और सब से अधिक यह कि वह शुद्ध और चमकती हुई तौहीद (एकेश्वरवाद) जो हर प्रकार के शिर्क की मिलावट से खाली है जो अब मिट चुकी है उसका क़ौम में दोबारा पौधा लगा दूं। और यह सब कुछ मेरी शक्ति से नहीं होगा अपितु उस ख़ुदा की शक्ति से होगा जो आकाश और पृथ्वी का ख़ुदा है। मैं देखता हूं कि एक ओर तो ख़ुदा ने अपने हाथ से मेरी तर्बियत (प्रशिक्षण) करके और मुझे अपनी वह्यी से सम्मानित करके मेरे हृदय को यह जोश प्रदान किया है कि मैं इस प्रकार के सुधारों के लिए खड़ा हो जाऊं और दूसरी ओर उसने हृदय भी तैयार कर दिए हैं जो मेरी बातें मानने के लिए तैयार हों। मैं देखता हूं कि जब से ख़ुदा ने मुझे संसार में मामूर करके भेजा है उसी समय से संसार में एक महान क्रान्ति आ रही है।"

(लैक्चर लाहौर, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 20 पृष्ठ 180-181)

यह आप का लाहौर का लैक्चर था। फिर इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि अल्लाह तआला अपनी रहमत के इज़हार और बंदों को बचाने के लिए अपने नबी और मुस्लेह और विशेष बंदे को भेजता है आप फरमाते हैं कि

" हज़रत रब्बुल आलमीन का सनातन क़ानून यही है कि जब दुनिया में किसी नौ की शिद्दत और कष्ट अपने चरम को पहुंच जाते हैं तो इलाही रहमत उस के दूर करने की तरफ़ ध्यान देती है। जैसे जब वर्षा के रुक जाने से भयंकर स्तर का अकाल पड़ कर सृष्टि का काम समाप्त होने लगता है तो आख़िर ख़ुदा तआला बारिश कर देता है। और जब महामारी से लाखों आदमी मरने लगते हैं तो कोई अवस्था महामारी के सुधार की निकल आती है या कोई दवा ही पैदा हो जाती है और जब किसी ज़ालिम के पंजा में कोई क़ौम गिरफ़्तार होती है तो आख़िर कोई आदिल और फ़र्याद दूर करने वाला पैदा हो जाता है। अत: ऐसा ही जब लोग ख़ुदा का रास्ता भूल जाते हैं और तौहीद और सच्चाई को छोड़ देते हैं। तो ख़ुदा तआला अपनी तरफ़ से किसी बंदा को सम्पूर्ण बसीरत प्रदान फ़र्मा कर और अपने कलाम और इलहाम से समन्वित कर के मानव जति की हिदायत के लिए भेजता है कि ताकि जितना बिगाड़ हो गया है इस का सुधार करे। इस में वास्तविकता यह है कि परवरदिगार जो सारे संसार का क़य्यूम का है" दुनिया को क़ायम करने वाला है। "और बक़ा और संसार का वजूद इसी के सहारे और भरोसे से है किसी अपनी फ़ैज़ान पहंचाने की विशेषता को ख़लक़त से दूर नहीं करता और न बेकार और स्थगित छोड़ता है बल्कि प्रत्येक विशेषता उस की अपने अवसर पर शीघ्रतर प्रकट हो जाती है।"

(बराहीन अहमदिया हिस्सा 2, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 113-114 बाक़ी हाशिया नम्बर 10)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह वर्णन फ़रमाते हैं कि

"वह व्यक्ति बड़ा ही मुबारक और ख़ुश-क़िस्मत है जिसका दिल पाक हो और वह अल्लाह तआला की महानता और जलाल के इज़हार का इच्छुक हो। क्योंकि अल्लाह तआला उसे दूसरों पर मुक़द्दम कर लेता है। जो लोग मेरा विरोध करते हैं उनका और हमारा फ़ैसला अल्लाह तआला ही के सामने है। वे हमारे और उनके दिलों को ख़ूब जानता है और देखता है कि किस का दिल दुनिया के दिखावा और नुमाइश के लिए है और कौन है जो ख़ुदा तआला ही के लिए अपने दिल में वेदना रखता है।" फ़रमाया कि "यह ख़ूब याद रखो कि कभी रूहानियत लौटा नहीं करती जब तक पवित्र दिल न हो। जब दिल में पाकीज़गी और पवित्रता पैदा होती है तो इस में तरक़्क़ी के लिए एक विशेष शक्ति और ताकत पैदा हो जाती है। फिर उस के लिए हर किस्म के सामान उपलब्ध हो जाते हैं और वह तरक़्क़ी करता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखो कि बिलकुल अकेले थे और इस असहाय हालत में दावा करते हैं

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (अलाअराफ़159)

कौन उस समय ख़्याल कर सकता था कि यह दावा ऐसे असहाय आदमी का सफल होगा। फिर साथ ही इतनी मुश्किलें आपको पेश आईं कि हमें तो उनका हज़ारवां हिस्सा भी नहीं आएं।"

(मल्फ़ूज़ात जलद 8 पृष्ठ 157-158)

फिर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दुनिया को प्राय दुनिया को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि

"हमारी अन्तिम नसीहत यही है कि तुम अपने ईमान की ख़बर लो । न हो कि तुम अहंकार और लापरवाही दिखला कर ख़ुदा तआला की नज़र में विद्रोही ठहरो। देखो ख़ुदा ने तुम को ऐसे समय में देखा कि जो देखने का समय था। अत: कोशिश करो कि सारी नेकियों के वारिस हो जाओ। ख़ुदा ने आकाश से देखा कि जिस को इज़्ज़त दी गई उसे पैरों के नीचे कुचला जाता है और वह रसूल जो सबसे अच्छा था उसे गालियां दी जाती हैं। उसे बुरे काम करने वालों और झूठों और झूठ बोलने वालों में गिना जाता है और उसकी वाणी को जो पवित्र कुरआन है बुरे शब्दों के साथ याद कर आदमी की वाणी माना जाता है। उसने अपनी प्रतिज्ञा को याद किया। वही वादा जो इस आयत में है اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (अल्हिजर 10) अत: आज उसी प्रतिज्ञा के पूरे होने का दिन है। उसने बड़े ज़ोरदार हमलों और तरह तरह के निशानों से तुम पर प्रमाणित कर दिया कि यह सिलसिला जो स्थापित किया गया उस का सिलसिला है। कभी तुम्हारी आँखों ने ऐसे सच्चे और विश्वसनीय रूप से वे ख़ुदा तआला के निशान देखे थे जो अब तुम ने देखे? ख़ुदा तुम्हारे लिए कुश्ती करने वालों की तरह अन्य क़ौमों से लड़ा और उन पर विजय पाई। देखो आथम के मामले में भी **एक कुश्ती** थी। तलाश करो आज आथम कहाँ है। सुनो ! आज वह मर चुका है। वह इसी शर्त के अनुसार जो इल्हाम में थी कुछ दिन छोड़ा गया और फिर उसी शर्त के अनुसार जो इल्हाम में थी पकड़ा गया। **दूसरी कुश्ती** लेखराम का मामला था। अत: सोच कर देखो कि इस कुश्ती में भी ख़ुदा तआला कैसे विजयी हुआ ? और आप अपनी आंख से देखा कि जिस तरह उसकी मौत की इल्हामी भविष्यवाणियों में पहले से लक्षण निर्धारित किए गए थे उसी तरह वे लक्षण प्रकट हुए। ख़ुदा के प्रकोपीय निशान ने एक क़ौम पर सख्त शोक छा दिया। क्या कभी आप पहले इस से देखा कि तुम में और तुम्हारे सम्मुख इस प्रताप से ख़ुदा का निशान प्रकट हुआ हो ? अत: हे मुसलमानों की सन्तानों ! ख़ुदा तआला के कार्यों का अपमान मत करो। **तीसरी कुश्ती** महोत्सव के जलसा का मामला था। देखो इस कुश्ती में भी ख़ुदा तआला ने इस्लाम का बोल बाला किया है और तुम्हें अपना निशान दिखलाया और समय से पहले अपने बन्दा पर प्रकट किया कि उसी का लेख विजयी रहेगा। और फिर ऐसा ही करके दिखला भी दिया। और लेख के बरकतों वाले प्रभाव से सभी दर्शकों को चौंका दिया। क्या यह ख़ुदा का काम था या किसी और का ? फिर **चौथी कुश्ती** डाक्टर क्लार्क का मामला था जिस में तीनों कौमें आर्य और ईसाई और विरोधी मुसलमान एकजुट हो गए थे ताकि मेरे पर हत्या का मुकदमा साबित करें। इस में ख़ुदा तआला ने पहले से प्रकट कर दिया कि वे अपने इरादे में असफल रहेंगे। और दो सौ के क़रीब लोगों को समय से पहले यह इल्हाम सुनाया गया और अंत में हमारी जीत हुई। **पांचवीं कुश्ती** मिर्ज़ा अहमद बेग होशियारपुरी का मामला था जिसके प्रिय और सम्बन्धी इस्लाम से ठट्ठा करते थे और कुछ सख्त मुर्तद उन में से पवित्र कुरआन का सख्त विरोध करके और इस्लाम पर बुरी ज़बान खोलकर मुझ से इस्लाम की सत्यता का निशान मांगते थे और इश्तिहार छपवाते थे। अत: ख़ुदा ने उन्हें यह चिन्ह दिया कि उनका प्रिय अहमद बेग कुछ मौतों और मुसीबतों के देखने के बाद तीन साल के भीतर मर जाएगा अत: ऐसा ही हुआ और वह समय सीमा के अंदर मर गया ताकि पता करें कि प्रत्येक दुस्साहस की सज़ा है।"

(अय्यामुस्सुलह, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 14 पृष्ठ 325 से 327)

पस आप ने दुनिया को सचेत किया कि ख़ुदा तआला के भेजे हुए से लड़ाई मत करो। जब अल्लाह तआला ने भेजा है तो वह मदद और सहायाता भी फ़रमाता है निशान भी दिखाता है। आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे वैभव पूर्ण शब्दों में कहा है कि

"दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने इस को स्वीकार न किया लेकिन ख़ुदा इसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरादार हमलों से इस की सच्चाई ज़ाहिर कर देगा।"

(बराहीन अहमदिया हिस्सा 4, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 1 पृष्ठ 665 बाक़ी हाशिया

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

दर हाशिया नम्बर 4)

अत: आज दो सौ से ऊपर देशों में फैली हुई जमाअत अहमदिया इस बात का ऐलान कर रही है कि अल्लाह तआला आप की सच्चाई दुनिया पर ज़ाहिर फ़रमाता चला जा रहा है। अल्लाह तआला हमें भी आपके मिशन को फैलाने वालों में हिस्सादार बनाए और हमारे ईमान तथा विश्वास को मज़बूत करे और हमें अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अब मैं आजकल जो महामारी फैली हुई है इस के बारे में दुनियादारों के जो तबसरे हैं और समीक्षाएं हैं वे प्रस्तुत करना चाहता हूँ

फ़लिप जोंस्टन (Philip Johnston) डेली टैलीग्राफ़ 18 मार्च 2020 ई में यह लिखते हैं कि नैट फ़लकस (Netflix)और इस तरह के अन्य प्लेटफ़ार्मज़ की रिपोर्ट है कि आजकल दिखाई जाने वाली 2011 ई की एक फ़िल्म बहुत प्रसिद्ध हो रही है जिसका नाम कोंटेजीन Contagion है। इस की कहानी में एक वाइरस (virus) के फैलाओ, तिब्बी अनुसन्धान करने वालों और सेहत की संस्थाओं की तरफ़ से इस बीमारी की पहचान और इस पर क़ाबू पाने की बहुत कोशिशों, आर्थिक नियम ख़त्म होने और आख़िर में इस के फैलाओ को रोकने के वैक्सीन (vaccine) परिचित करवाने का वर्णन है। वह लिखता है कि मैं सोचता हूँ कि शायद हमारी इस तरह दुनिया की तबाही के विषय पर बनी फिल्मों में दिलचस्पी लेना हमारे लम्बा समय रहने वाली दृढ़ता और तरक़्क़ी का नतीजा है। दुनियादार जो तरक़्क़ी कर रहे हैं शायद उस का नतीजा है जिस के बारे में हम में से अधिकांश का विचार है कि यह तरक़्क़ी हमेशा रहेगी। कहता है कि ये हैरान करने वाला है कि सिर्फ दो हफ़्तों के दौरान हमारी दुनिया बिलकुल उलट चुकी है। लिखता है आगे कि हमारे सारे मन्सूबे रुक गए हैं और भविष्य के बारे में हमारी उम्मीदें अविश्वसनीय हैं। फिर आगे कहता है कि न तो सर्द जंग के दौरान ऐटमी जंग का ख़तरा और न ही वर्तमान समय में पेश आने वाले आर्थिक परेशानियों का ऐसा प्रभाव था जिस तरह आज इस महामारी से हो रहा है। फिर आगे लिखता है कि यहां तक कि पिछली विश्वव्यापी जंग के बूच भी लोग थीयेटर और सिनेमा और रैस्टोरैंट और कैफे, क्लबों पबज़ (pubs) में जाते थे। कम से कम ये चीज़ थी जो लोगों को उपलब्ध थी लेकिन हम आजकल यह भी नहीं कर सकते। फिर कहता है कि हम में से अधिकतर जो दूसरे विश्व युद्ध के बाद के ज़माने में पले बढ़े हैं हम लोगों ने हमेशा ख़ुशहाली , मज़बूती और सन्तोष की आशा की है जिसका पहली नस्लों ने कभी कल्पना भी नहीं किया थी। और न ही वे लोग ऐसे हालात में थे कि इस बारे में सोचते। फिर आगे लिखता है कि उम्मीद है कि साईंस इस बीमारी की वैक्सीन या ईलाज लेकर हमारे बचाओ के लिए आ जाए और शायद ऐसा हो भी जाए। और फिर कहता है सेइटल (Seattle) में, अमरीका में आज इन्सानी सेवकों पर अनुभव का यह आरम्भ हुआ है लेकिन कहता है कि बुरी ख़बर यह है कि यह जानने में भी महीनों लगेंगे कि इस वैक्सीन का कोई लाभ भी होगा या नहीं। फिर आगे वह लिखता है कि पूरी तारीख़ में लोगों ने इस तरह के हालात में अपने अक़ीदे का सहारा लेकर अपने आपको इन हालात से गुज़ारा है। पुरानी तारीख़ जो है इस में अगर ऐसे ख़तरनाक हालात पैदा हुए तो उन्होंने अपने अक़ीदे का सहारा लिया है और अपने हालात को गुज़ारा। अल्लाह की तरफ़ रुजू किया ताकि इन लोगों और उनके प्यारों के साथ जो कुछ हुआ है इस को कोई अर्थ और मतलब दें। फिर आगे यह लिखता है कि नास्तिक ऐसे अवसरों पर हमेशा अपने आपको तसल्ली देने के लिए एक सेकूलर इन्सानियत पसंदाना दृष्टिकोण अपनाते हैं। यह बुनियादी तौर पर एक रोशन ख़्याली की कल्पना है जो नास्तिक अपनाते हैं। उनका यह दृष्टिकोण है कि इन्सानी कोशिशों से क़ुदरती अमल को हमेशा बेहतर किया जा सकता है और उसे तक़दीर या ख़ुदा के क़हर से जोड़ना ज़रूरी नहीं है। फिर कहता है कि हमने कितनी बार लोगों को यह कहते हुए सुना है कि सब कुछ ठीक हो जाएगा क्योंकि साईंसदान कुछ हल निकाल लेंगे चाहे वह ग्लोबल वारमिंग का मसला हो या कोई महामारी की बीमारी। हमें शीघ्र यह पता चलने वाला है कि मानो इस तरह की उम्मीद रखना सही है या नहीं। अगर ऐसा नहीं है तो फिर कहता है (दुनियादार है ख़ुद)कि फिर मैं शायद चर्च की तरफ़ वापस चला जाऊं। अभी तो मैं मज़हब से दूर हूँ, ख़ुदा से दूर हूँ और जो बज़ाहिर गवाहियां नज़र आ रही हैं यह ज़ाहिर इस तरह कर रहे हैं और अगर यह नहीं होता जिस तरह यह साईंसदान कह रहे हैं तो फिर हमें भी सूचना पड़ेगा कि चर्च की तरफ़ वापस जाएं, मज़हब की तरफ़ जाएं।

अत: इस वाइरस ने दुनिया को इस बात पर सोचने पर मजबूर कर दिया है कि ख़ुदा की तरफ़ रुजू करें लेकिन वास्तविक ख़ुदा और ज़िन्दा ख़ुदा तो सिर्फ इस्लाम का ख़ुदा है जिसने अपनी तरफ़ आने वालों को रास्ता दिखाने का ऐलान फ़रमाया है। एक क़दम बढ़ने वालों को कई क़दम बढ़कर हाथ पकड़ने का ऐलान फ़रमाया है। अपनी पनाह में लेने का ऐलान फ़रमाया है। अत: इन हालात में हमें जहां अपने आपको संवारने की ज़रूरत है वहां अपनी तब्लीग़ को भी प्रभावकारी रंग में करने की ज़रूरत है। दुनिया को इस्लाम के बारे में पहले से बढ़कर परिचित कराने की ज़रूरत है और फिर हर अहमदी को यह कोशिश करनी चाहिए कि दुनिया को बताए कि अगर अपनी बक़ा चाहते हो तो अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को पहचानो। अगर अपने बेहतर अंजाम चाहते हो तो अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को पहचानो कि आख़िरी ज़िन्दगी का अंजाम जो है वही वास्तविक अंजाम है। इस के साथ किसी को सम्मिलित न ठहराओ और इस की सृष्टि के हक़ अदा करो।

अत: हमेशा यह कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला इस की तौफ़ीक़ भी हर एक को प्रदान फ़रमाए। यह महामारी तो अब दुनियादार भी कहते हैं कि अब बढ़ती चली जानी हैं। इसलिए अपने बेहतर अंजाम के लिए जैसा कि मैंने कहा बहुत ज़रूरत है कि हम भी ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू करें और दुनिया को भी बताएं कि असल अंजाम आख़िरी ज़िन्दगी का अंजाम है जिसके लिए तुम्हें अल्लाह तआला की तरफ़ बहरहाल आना होगा। इस के बारे में एक माहिर की चेतावनी है। The Times मैं यह निबन्ध छ: मार्च में प्रकाशित हुआ था। एक माहिर ने सचेत किया है कि ख़तरनाक वाइरस की जीनीयाती परिवर्तन के आम होने की बहुत संभावना है और इस के साथ कुछ वर्षों में एक नए कोरोना वाइरस के दुनिया में फैल जाने की भी संभावना है। उसने लिखा है कि शायद अगले हर तीन साल के बाद कोई और नई बीमारी आ जाए।

फिर ब्लूमबर्ग (Bloomberg)ने भी एक निबन्ध लिखा। वह कहता है कि साईंसदान कोरोना वाइरस पर क़ाबू पा सकते हैं लेकिन छूआछूत की बीमारियों के ख़िलाफ़ इन्सानियत की जंग न ख़त्म होने वाली जंग है। इन्सानियत और कीटाणुओं के बीच तरक्की की दौड़ में कीड़े दोबारा आगे आ रहे हैं। वर्ल्ड आर्गेनाईज़ेशन (WHO) के अनुसार 1970 ई के बाद से अब तक पंद्रह सौ से अधिक नए वाइरस पता चले हैं और इक्कीसवीं सदी में छूआछूत की बीमारीयां पहले से कहीं अधिक तेज़ी से और दूर तक फैल रही हैं। फिर कहता है कि इस से पहले जो सीमति इलाक़ों में रहने वाली महामारी थीं अब वे बहुत तेज़ी से विश्वव्यापी स्तर पर भी फैल सकती हैं। बहरहाल उस के लंबे विस्तार हैं यह तो सारे वर्णन नहीं हो सकते लेकिन अपने अंजाम बख़ैर के लिए जैसा कि मैंने कहा हमें ख़ुदा तआला से पहले से बढ़कर सम्बन्ध पैदा करने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ दे।

कोरोना की महामारी के बारे में पहले ही मैं हिदायत दे चुका हूँ। याद दिलाने के लिए भी करवा दूं क्योंकि अब यह समस्त दुनिया में बड़ी तेज़ी से फैल रहा है और यहां भी इस का प्रभाव बहुत अधिक हो रहा है। अब हुकूमत भी इस बात पर मजबूर

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हो गई है कि क़दम उठाए और अधिक कठोर क़दम उठाए। बड़े क़दम उठाए। जब बीमारियां आती हैं, महामारियां आती हैं तो हर एक को अपनी लपेट में ले सकती हैं इसलिए हर एक को बहुत सावधानी की ज़रूरत है। हुकूमती हिदायतों पर अनुकरण करें। बड़ी उम्र के लोग, बीमार लोग या ऐसी बीमारी में पीड़ित लोग जिनके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है उनको बहुत अधिक सावधानी करने की ज़रूरत है। बड़ी उम्र के लोग घरों से कम निकलें और यही हुकूमत का ऐलान भी है सिवाए उस के कि बहुत अच्छी सेहत हो प्राय घर में रहना चाहिए। यहां मस्जिद में आने में भी सावधानी करें। जुम्अ: भी अपने क्षेत्र की मस्जिद में पढ़ें और यहां आज की हाज़री से भी लग रहा है कि अक्सर लोग जुम्अ: अपने अपने इलाक़ों में ही पढ़ रहे हैं। सिवाए इस के कि इस बात पर भी हुकूमत की तरफ़ से पाबंदी लग जाए कि जुम्अ: के भी gathering न हो। औरतें प्राय मस्जिद में आने से परहेज़ करें। बच्चों के साथ आती हैं उनको परहेज़ करना चाहिए। फिर प्राय डाक्टर भी आजकल यही कह रहे हैं कि अपने जिस्म की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए अपने आराम की तरफ़ भी ध्यान देना चाहिए। इस के लिए अपनी नींद को पूरा करना चाहिए। अपनी नींद पूरी करें। ख़ुद भी और बच्चे भी। एक बड़े आदमी के लिए छ: सात घंटे की नींद है। बच्चे के लिए आठ, नौ घंटे या दस घंटे की नींद है। इस तरफ़ ध्यान देनी चाहिए। यह नहीं कि बारह बजे तक सारी रात बैठ के टीवी देखते रहे और इस के बाद एक तो नमाज़ पर न उठ सके फिर सुबह जल्दी जल्दी उठे, चंद घंटों के बाद काम पर जाना है इस की मुश्किल फिर सारा दिन सस्ती, फिर कमज़ोरी, फिर काम की थकावट और इसी वजह से फिर यह बीमारियां जो हैं हमला भी करती हैं। इसी तरह बच्चों को भी आदत डालें कि जल्दी सोएँ और आठ नौ घंटे की नींद पूरी कर के जल्दी उठें। फिर बाज़ारी चीज़ें खाने से भी परहेज़ करें। उनसे भी बीमारियां फैलती हैं खासतौर पर यह जो क्रिस्प (crisp) इत्यादि के पैकेट हैं ये बच्चों को खाने के लिए लोग दे देते हैं या ऐसी चीज़ें जिस में कुछ परेज़रयटोज़ (preservatives) भी डाले होते हैं यह सेहत के लिए ख़तरनाक हैं। उनसे परहेज़ करना चाहिए ये भी धीरे-धीरे इन्सानी जिस्म को कमज़ोर करते हैं।

फिर यह भी डाक्टर कहते हैं कि आजकल पानी बार-बार पीना चाहिए। ज़रूरी है कि एक घंटे बाद, आधे पौने घंटे बाद घंटे बाद एक दो घूँट पी लें। ये भी बीमारी से बचने के लिए एक माध्य है। हाथों को साफ़ रखना चाहिए। अगर सेनेटाइज़र नहीं भी मिलते तो हाथ धोते रहें और जैसा कि मैंने पहले भी कहा था कम से कम पाँच बार वुज़ू करने वाले जो हैं उनको सफाई का अवसर मिल जाता है। वह इस तरफ़ ध्यान करें। छींक के बारे में पहले भी मैं कह चुका हूँ। मस्जिदों में भी और आम तौर पर भी अपने घरों में बैठे हुए भी रूमाल आगे रुख के, नाक पर रख के या अब कुछ डाक्टर कहते हैं कि अपना बाज़ू सामने रख के उस पर छींकें ताकि इधर उधर छींटे ना उड़ें। बहरहाल सफाई बहुत ज़रूरी है और इस का ख़्याल रखना चाहिए लेकिन आख़िरी हथियार दुआ है और यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हम सबको इस की बुराई से बचाए। इन समस्त अहमदियों के लिए भी खासतौर पर दुआ करें जो किसी वजह से इस बीमारी में पीड़ित हो गए हैं या डाक्टरों को शक है कि उनको भी यह वाइरस है या किसी भी और बीमारी में पाड़ित हैं सब के लिए दुआ करें।

फिर इसी तरह किसी भी बीमारी की कमज़ोरी की वजह से जैसा कि मैंने कहा वाइरस हमला करता है तो उनके लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला उन्हें भी बचा के रखे। उमूमी तौर पर हर एक के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला दुनिया को इस महामारी के प्रभावों से बचा के रखे। जो बीमार हैं उन्हें शफ़ाए कामला प्रदान फ़रमाए और हर अहमदी को शिफ़ा प्रदान फ़रमाने के साथ साथ ईमान और विश्वास में भी मज़बूती पैदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 10 अप्रैल 2020 ई पृष्ठ 5 से 8)

पृष्ठ 2 का शेष

से बहुत आन्नदित हुआ हूँ। उनका हर शब्द इन्सानियत के लिए एक शिक्षा था। उनका पैग़ाम विश्वव्यापी पैग़ाम है कि मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं। यह पैग़ाम आज समस्त इन्सानियत के लिए ज़रूरी है। ख़ुदा पर ईमान रखना और समस्त इन्सानों की मदद करना यह ऐसा काम है जो समस्त लोगों के बीच मतभेदों को दूर कर देगा।

जमाअत अहमदिया लोगों को सकारात्मक चीज़ें सिखाती है। हुज़ूर ने प्रैस कान्फ्रैंस में पत्रकारों को जो उत्तर दिए वह इन्सानियत की बुनियादी आचरण को प्रकट कर रहे थे। मुझे उम्मीद है कि में एक दिन हुज़ूर के साथ इंटरव्यू का सम्मान प्राप्त करूँगा। हुज़ूर जमाअत अहमदिया के पेशवा हैं लेकिन सबसे बढ़कर वह ऐसे इन्सान हैं जो हर एक को समझते हैं और अच्छी नसीहत फ़रमाते हैं। मुझे उम्मीद है कि और अधिक लोग अहमदियत स्वीकार करेंगे जो इन्सानियत की बेहतरी के लिए काम करेंगे।

वोजो मानियोसकी (Vojo Manevski) साहिब दूसरी बार जलसा सालाना में शामिल हुए थे। उन्होंने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: मैंने गहराई में जाकर अहमदी मुसलमानों के पैग़ाम को समझा है। बतौर पत्रकार मैंने विभिन्न धर्मों में मिलती जुलती शिक्षाओं का जायज़ा लिया है। मज़हब की बुनियाद अल्लाह तआला से मुहब्बत और मानव जाति से मुहब्बत पर आधारित है। यह ऐसा पैग़ाम है जिसकी आज के दौर में बहुत ज़रूरत है। आज की दुनिया की बहुत से समस्याओं का हल जो दुनिया को सख़्त परेशान कर रहे हैं इस मुहब्बत के पैग़ाम में है। आज यूरोप का बहुत बड़ा मसला दाएं बाज़ू के सियास्तदानों की ताक़त में इज़ाफ़ा है जिसका हल सिर्फ़ बातचीत से संभव है जो विभिन्न धर्मों , कल्चर और Civilization के बीच हो। अगर हम ख़ुदा की तलाश करें तो हमें इल्म हो जाएगा कि हम में आपस में बहुत अधिक अन्तर नहीं है। मैं ख़लीफ़तुल मसीह की इस बात को याद रखूँगा कि सब किताबें जो आज मौजूद हैं वे एक शीशे की तरह हैं जो वक़्त के गुज़रने से मद्धम हो गई हैं और लोगों के कर्मों के कारण से वह शिक्षा कम नज़र आ रही है। सब इल्हामी किताबों की व्याख्या दरुस्त होनी चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला का कलाम और शब्द की व्याख्या लोगों की ज़रूरत के अनुसार नहीं होनी चाहिए बल्कि प्रत्येक इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर काम करने वाले हूँ। यह नहीं कि आज मोमिन हों और कल काफ़िर।

जितना हम ख़ुदा से दूर होंगे इतने ही हम इन्सानियत और लोगों से दूर होंगे। भौतिकता का दौर रुहानी ज़िन्दगी और आपस के सम्बन्धों को ख़त्म कर रहा है। इसलिए हम अपनी फ़ैमिली और दोस्तों की हिफ़ाज़त करें। सम्बन्धों की हिफ़ाज़त करें। मैं आख़िर में जमाअत मेसेडोनिया का धन्यवादी हूँ और समस्त दोस्तों का धन्यवादी हूँ जो इस जमाअत में हैं। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला समस्त इन्सानों की रक्षा करे।

रामीज़ बायरामूसकी (Ramiz Bajramouski) साहिब पिछले साल जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुए थे और इस साल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बैअत करके जमाअत में शामिल हुए हैं। उन्होंने वर्णन किया: जलसा के दौरान हुज़ूर अनवर से बहुत कुछ सीखने को मिला है जो मेरी ज़िन्दगी में काम आने वाली बातें हैं।

एक मेहमान रिज़वान दुमीरवो (Ridvan Dimirov) साहिब ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा जलसा सालाना समस्त लोगों को इस बात का अवसर प्रदान करता है कि वह इस्लाम के बारे में इसी तरह विभिन्न धर्मों और सभ्यताओं के बारे में इल्म प्राप्त करें। जलसा में सारी दुनिया से लोग शामिल होते

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

हैं। जलसा वह स्थान है जहां हर किसी के ईमान और यक़ीन में वृद्धि होती है। मुझे एक ही जगह मुसलमानों के साथ अन्य धर्मों के लोगों को देखकर बहुत अच्छा लगा।

वफ़द में शामिल एक मेहमान सेवदयान सुलैमानौसकी (Sevdjan Sulejmanovski) साहिब ने अपने भावनाओं का इस तरह इज़हार किया कि आज मैंने अहमदियत स्वीकार की है और इस सम्मान पर बहुत ख़ुश हूँ। इस साल जलसा पर मैंने अधिक संख्या में लोगों को देखा। खाना और रिहायश अच्छी थी। ख़लीफ़तुल मसीह की तक़ारीर बहुत अच्छी थीं क्योंकि इस्लाम के बारे में वह बहुत अच्छे अंदाज़ में बताते हैं। विशेषत: जब वह इस्लाम के बारे में संक्षिप्त शब्द में स्पष्टीकरण वर्णन फ़रमाते हैं। वह आसान और सादा शब्द में बताते हैं। मेरे विचार में 2019 ई का जलसा बहुत कामयाब रहा।

एक दोस्त ने सवाल किया कि क़ुरआन करीम से ख़िलाफ़त के बारे में रहनुमाई फ़र्मा दें। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में मोमिनीन से, नेक लोगों से यह वादा फ़रमाया है कि जो नेक लोग होंगे और नेक कर्म करने वाले हूँ उनको ख़िलाफ़त का इनाम प्रदान होता रहेगा।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपने इबादात करनी हैं और ख़ुदा से सम्बन्ध स्थापित करना है। ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहें, इताअत करें, ख़ुदा से सम्बन्ध रखें और अपने कर्मों को दुरुस्त करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि मैं ख़ातमुल ख़लफ़ा हूँ। अब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सम्बन्ध और वास्ता से ही आगे ख़िलाफ़त जारी होनी है। इस के इलावा और कोई ख़िलाफ़त नहीं है और न इस के इलावा कोई और ख़िलाफ़त जारी रह सकती है। ऐसी ख़िलाफ़त जो उग्रवाद की शिक्षा देती है, उग्रवाद की शिक्षा देती है, मार-कुटाई पर उभारती है यह हरगिज़ ख़िलाफ़त नहीं है।

एक दोस्त ने सवाल किया कि क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोई हदीस ऐसी है जिस में वर्णन हो कि मसीह ने कब आना था? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हदीस है कि नबुव्वत के बाद नबुव्वत की प्रणाली पर ख़िलाफ़त स्थापित होगी। फिर हानि पहुंचाने वाली बादशाहत होगी, फिर इसके बाद इस से बढ़कर अत्याचार करने वाली बादशाहत स्थापित होगी। फिर यह ज़ुल्म तथा अत्याचार का दौर ख़त्म होगा और फिर नबुव्वत की प्रणाली पर ख़िलाफ़त स्थापित होगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले मह्दी की निशानियों में सूरज , चांद ग्रहण को भी एक निशान क़रार दिया। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मसीह मह्दी का दावा किया तो लोगों ने कहा कि चांद, सूरज ग्रहण का निशान पूरा नहीं हुआ। अत:1894 ई में सूरज , चांद को ग्रहण लगा और फिर 1895 ई में वैस्ट में सूरज , चांद को ग्रहण लगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि दावतुल अमीर का अनुवाद मेसेडोनिया भाषा में करें। इस में आने वाले मसीह मह्दी की निशानियों का वर्णन है। उनको बता दें और इस किताब का अनुवाद शीघ्र करवाएं।

एक साहिब ने निवेदन किया कि मेरा सम्बन्ध मेसेडोनिया के एक शहर से है। हम ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट का शुक्रिया अदा करते हैं कि हमको बच्चों के लिए एक गाड़ी उपलब्ध की गई है।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि मैं हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा करता हूँ कि मुझे हुज़ूर से सीधा बात करने का अवसर मिला। हम जर्मनी जमाअत का भी शुक्रिया अदा करते हैं कि लोग ख़ुद ज़मीन पर सो रहे होते थे और हम होटल में रहते थे।

कुछ लोगों ने एक और अधिक मुरब्बी भिजवाने का निवेदन किया। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आप को एक मुरब्बी दिया हुआ है। इंशा अल्लाह और भी भिजवा देंगे।

एक ग़ैर जमाअत औरत ने निवेदन किया कि मैं पहली बार जलसा में शामिल हुई हूँ और सारे निज़ाम से बहुत प्रभावित हुई हूँ। जिस तरह लोग एक दूसरे की मदद कर रहे थे, बहुत हैरान करने वाली बात थी। मैं अगली बार भी आऊँगी और आपकी जमाअत का हिस्सा होंगी।

जानी रजीपोव (Jani Redjepov) साहिब ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: मैं पहली बार अपनी फ़ैमिली के साथ जलसा में शामिल हुआ हूँ। जलसा बहुत अच्छा रहा। जलसा एक शानदार अनुभव था। हमारी बहुत अच्छी मेहमान नवाज़ी की गई। हुज़ूर अनवर ने बहुत लाभदायक बातें वर्णन फ़रमाएं। मेसेडोनिया में मैं ने जब पहली बार अहमदियत का पैग़ाम प्राप्त किया तो मुझे एहसास हो गया था कि अहमदियत का पैग़ाम लोगों के लिए सकारात्मक रहनुमाई का काम है। पहले मेरी फ़ैमिली ने इस पैग़ाम को क़बूल किया और फिर मेरी रहनुमाई की। जलसा सालाना में शामिल होने का प्रबन्ध करने पर आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ

तानीया लाज़ारोवा (Tanja Lazarova) साहिबा ने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा: मैं पहली बार जलसा में शामिल हुई हूँ। यहां मेरे लिए सब कुछ नया था और बहुत अच्छा था। समस्त प्रबन्ध हर लिहाज़ से बहुत अच्छे थे। विशेषत: काम करने वाले सेवक उन का अंदाज़ बहुत दोस्ताना था। मुस्कुराते चेहरों के साथ पेश आ रहे थे। खाना बहुत उत्तम था। हुज़ूर अनवर के ख़िताब बहुत इल्मी थे और सब के लिए आसानी से समझ आने वाले थे।

इसी तरह कहती हैं कि "जो नए मेहमान थे वह जमाअत के प्रबन्ध और मेहमान नवाज़ी से बहुत प्रभावित थे। और हुज़ूर अनवर के ख़िताबों और इल्म से बहुत प्रभावित थे और दोबारा आने की इच्छा प्रकट करते रहे।

मेसेडोनिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर के साथ यह मुलाक़ात 6 बजकर 45 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के सदस्यों ने हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया और तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

8 जुलाई 2019 ई(दिनांक सोमवार)

बुलग़ारिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार देश बुलग़ारिया से आने वाले वफ़द ने 6 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस साल जलसा सालाना जर्मनी में शामिल के लिए बुलग़ारिया से 49 मर्दों पर आधारित वफ़द शामिल हुआ। इस में 15 अहमदी और 34 ग़ैर अज़ जमाअत ईसाई लोगों शामिल हुए। उन में से 16 लोगों By Air और 33 मर्द बस के द्वारा 30 घंटे से अधिक का सफ़र कर के जलसा में शामिल हुए।

बुलग़ारिया के वफ़द में शामिल एक औरत Temenyika Korcheva साहिबा ने वर्णन किया मैंने जलसा सालाना पर देखा कि बहुत से लोग , पूरी दुनिया से आए हैं और एक जगह पर इकट्ठे हैं और ये समस्त लोग ख़ुदा की तस्बीह तथा प्रशंसा में लगे हुए थे। जलसा की तक़रीरों में बहुत ही ख़ूबसूरत सन्देश सुने , जिनकी आज इन्सानियत को बहुत ज़रूरत है।

मैंने जलसा में यह भी देखा कि छोटे छोटे बच्चों को शुरू से ही मेहनत से काम करना सिखाया जाता है जैसा कि वे हमें पानी पिलाते थे। ये जलसा मुझे बहुत ही अच्छा लगा और मेरी इच्छा है कि अगली बार भी आऊँ।

वफ़द में शामिल एक और औरत Galia साहिबा ने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा: मैं तीनों दिन जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुई। मैं जलसा की मेहमान नवाज़ी और प्रबन्ध से बेहद प्रभावित हूँ। मैं इन उत्तम आचरण और नेक इरादे रखने वाले लोगों से भी बहुत प्रभावित हुई हूँ जिनसे मैं जलसा के अवसर पर मिली। इसके इलावा मुझे नज़में बहुत पसंद आईं और उनका बुल्गारियन अनुवाद भी।

वफ़द में शामिल एक ईसाई औरत Yulia Zlatanova साहिबा ने वर्णन किया मैं इस बात को सोच कर बहुत भावनात्मक हो रही हूँ कि मैं भी अहमदिया जमाअत के जलसा पर इन हज़ारों शामिल होने वालों के साथ शामिल हुई हूँ। बेशक में ईसाई हूँ , लेकिन मुझे हुज़ूर की तक़रीरें बहुत पसंद आएं। हुज़ूर की दुआएं दिल पर प्रभाव करने वाली थीं। तिलावत क़ुरआन करीम भी

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

मुझे बहुत पसंद आई इसी तरह उस का अनुवाद भी। प्रशंसा योग्य बात यह है कि छात्रों को इनामों और मैडल देने के लिए ख़लीफ़तुल मसीह ख़ुद खड़े हुए। मेरी इच्छा है कि हुज़ूर की समस्त दुआएं क़बूल हो जाएं ताकि समस्त धर्मों और दुनिया में अमन क़ायम हो जाए।

बुल्गारियन वफ़द की एक औरत Krasrmira Manikatova साहिबा ने ज़िक्र किया मुझे तीसरी बार जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने का अवसर मिला है। और हर साल मुझे नई से नई बातें सीखने को मिलती हैं। मैं तक़रीरों को बहुत ग़ौर से सुनती हूँ क्योंकि में एक Physiotherapist और Psychologist हूँ। मैं इन तक़रीरों में बताई जाने वाली जमाअत अहमदिया की शिक्षा के द्वारा,अपने हर मरीज़ के समस्याएँ बेहतर रंग में हल कर सकती हूँ। इसके इलावा इन तक़रीरों से में अपने लिए भी बहुत लाभदायक नसीहतें इकट्ठी कर के ले जाती हूँ जो मेरी ज़ाती और प्रोफ़ैशनल ज़िन्दगी में बहुत मददगार होती हैं। हमेशा की तरह इस बार भी जलसा के प्रबन्ध में कोई कमी नज़र नहीं आई।

बुल्गारियन वफ़द की एक ईसाई औरत Ivanka Marinova साहिबा ने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा :मुझे पहली बार जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने का अवसर मिला। मैं सारी चीज़ें देखकर हक़ीक़त में हैरान रह गई हूँ। खासतौर पर इन बच्चों से बहुत प्रभावित हुई जो गिलासों में हमें पानी देते थे। खाना बहुत उम्दा, लज़ीज़ , ताज़ा और गर्मगर्म पेश किया जाता था, हमें बस के सफ़र में और होटल की रिहायश में कोई मसला पेश नहीं आया। बेशक में ईसाई हूँ लेकिन जमाअत अहमदिया से बहुत प्रभावित हुई हूँ।

एक दोस्त Usman Mehmodov साहिब ने वर्णन किया मैं जलसा के प्रबन्ध से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपके स्वागत और समस्त प्रबन्ध से मैं बहुत ख़ुश हूँ। इस के अतिरिक्त हुज़ूर की तक़रीरें जिनमें मज़हब की ख़ूबसूरती वर्णन की गई थी, बहुत ही प्रभावित करने वाली थीं। मैं आपकी हिम्मत पर हैरान हूँ कि किस तरह आप असहायों की मदद करते हैं।

इसके इलावा मुझे State सैक्रेटरी की तक़रीर भी अच्छी लगी। अल्लाह करे कि इस जैसे विचार रखने वाले और लोग भी पैदा हों ताकि अधिक से अधिक मस्जिदों की तामीर की जा सके।

बुल्गारियन वफ़द की एक औरत Diana Denkova साहिबा ने बताया मुझे पहली बार जलसा में शामिल होने का अवसर मिला। मुझे समस्त प्रबन्ध बहुत अच्छे लगे। जब मैं जलसा गाह पहुंची तो बहुत हैरान हुई कि कैसे हज़ारों लोगों के लिए उत्तम प्रबन्ध और सुरक्षा की दृष्टि से प्रबन्ध किए गए हैं।

इसी तरह मुझे हुज़ूर अनवर की तक़रीरें बहुत पसंद आएं। खासतौर पर मैं इस बात से प्रभावित हुई कि छात्रों को हुज़ूर ने ख़ुद प्रमाण पत्र और मैडल दिए। मुझे नज़्में भी बहुत अच्छी लगीं। मेरा ख़्याल है कि सब लोगों को आपकी दुआओं पर ग़ौर करना चाहिए और अनुकरण भी करना चाहिए ताकि दुनिया में अमन स्थापित हो।

बुल्गारियन वफ़द की एक अन्य औरत मैंबर Ruja Metodieva साहिबा ने कहा मैं जलसा के समस्त प्रबन्ध से बहुत प्रभावित हूँ और खासतौर पर इस बात का ज़िक्र करना चाहती हूँ कि इस बार यूरोप के नए नए देशों से भी औरतें जलसा पर शामिल हुईं।

वफ़द में शामिल एक दोस्त Ognyan Manikatov साहिब वर्णन करते हैं मेज़बानों की तरफ़ से मेहमान नवाज़ी के प्रबन्ध बहुत ही उम्दा थे। जलसा गाह के हाल में भी समस्त प्रबन्ध में किसी किस्म की कोई कमी न थी। तीनों दिन के इज्लास बहुत अच्छे गुज़रे। तक़रीरें बहुत ही शिक्षा प्रदात थीं और उम्दा तौर पर तय्यार की गई थीं। हुज़ूर की तक़रीरें बहुत ही प्रभावित करने वाली थीं और उनमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत की बहुत दिलचस्प घटनाएं और उदाहरण थे। मैं आप सब के पुरजोश स्वागत और उच्च आचरण से बहुत ख़ुश हूँ।

वफ़द की एक मैंबर स्वीतलेना (Svetlena Pavlova) साहिबा ने वर्णन किया कि इस जलसा में शामिल हो कर यूं महसूस हो रहा था कि मैं एक रुहानी सफ़र में शामिल हूँ जिसने मेरे अनुभवों को ज़िन्दा कर दिया है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह की तक़रीरें सुनकर यूं लगा कि जैसे अल्लाह तआला की ज़ात क़रीब ही है। इस जलसा में समस्त शामिल होने वालों से ही प्यार और मुहब्बत का सुलूक किया जा रहा था।

एक मेहमान औरत Miss Biserka Petrova Gramatikova ने वर्णन किया कि जब मैंने अपने पिता के साथ इस जलसा में शामिल का इरादा किया तो यह तो ज़ेहन में था कि यह एक नई तरीके का तजुर्बा होगा लेकिन जब शामिल हुई तो महसूस हुआ कि यह तो निहायत ख़ूबसूरत और विशेषताओं वाले इन्सानों का एक ऐसा गिरोह है जिसमें समस्त लोग प्यार तथा मुहब्बत का बेहतरीन उदाहरण हैं। हुज़ूर अनवर की तक़रीरों से यह बात स्पष्ट हुई है कि मुसलमानों का एक बहुत ही छोटा सा हिस्सा है जो उग्रवाद कर रहा है। जिनकी वजह से मीडिया समस्त मुसलमानों को ही बदनाम करने पर लगा हुआ है। इस जलसा में शामिल होने मेरा बहुत अच्छा अनुभव था।

वफ़द के एक मैंबर Mr Peter Gramatikov जिनका सम्बन्ध बुलग़ारिया के शाही ख़ानदान से है और वह ख़ुद लेखक और यूनीयन आफ़ जर्नलिस्ट के मैंबर हैं उन्होंने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर की तक़रीर इन्सानी रूह को ज़िन्दा कर देती हैं। जलसा में शामिल होने से मुझे बहुत ख़ुशी हुई है।

बुलग़ारिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 7 बजकर 5 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया और हाथ मिलाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया

कोसोवो के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इसके बाद मलिक कोसोवो (Kosovo) से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। यह मुलाक़ात सात बज कर सात मिनट पर शुरू हुई। इस साल जलसा सालाना जर्मनी के अवसर पर कोसोवो से 45 लोगों को शामिल करने की तौफ़ीक़ मिली। इन में से 30 लोग अहमदी और 15 ग़ैर अज़ जमाअत दोस्त शामिल थे।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताबों का हम पर गहरा प्रभाव हुआ है। हमें हुज़ूर अनवर की दुआओं की ज़रूरत है ताकि जो नसीहतें हुज़ूर अनवर ने फ़रमाई हैं हम उन पर अनुकरण कर सकें

कोसोवो के वफ़द में एक दोस्त Mr.Shaip Zeqiraji साहिब दूसरी बार जलसा में शामिल हुए थे। जब उनको जलसा सालाना की सूचना मिली तो बहुत ख़ुश हुए मगर जैसे ही सफ़र के खर्च सामने आए तो दुविधा में पड़ गए। लेकिन समय के ख़लीफ़ा का दर्शन करने और जलसा सालाना में शामिल होने की तड़प की यह अवस्था थी कि उन्होंने अपनी गाय बेच कर इस जलसा में शामिल होने के खर्च पूरे किए।

उनका कहना था कि मुझे अल्लाह तआला के बाद सबसे अधिक मुहब्बत हुज़ूर अनवर से है। जब मैं पिछले साल हुज़ूर अनवर से मिला तो महसूस होता था कि हुज़ूर से एक नूर निकल रहा है और वही नूर इस बार भी महसूस हो रहा है। मुझे नहीं मालूम था कि क्या हो रहा है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह तआला उनको ईमान तथा इख़लास में बढ़ाता रहे।

कोसोवो के वफ़द में शामिल एक दोस्त Mr.Skender Asllani साहिब जोकि अल्बानियन भाषा और लिट्रेचर के उस्ताद हैं और उन्हें इस साल बैअत करने का सौभाग्य नसीब हुई है , उन्होंने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: प्रबन्ध बहुत उच्च स्तर के थे। ढूढ़ने पर भी कोई त्रुटि नहीं मिली। तक़रीर का स्तर बहुत उम्दा था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़िताबों से बहुत प्रभावित थे।

उन्होंने कहा कि सफ़र की थकावट इस क़दर थी कि वर्णन से बाहर है। लेकिन हुज़ूर अनवर को देखने और पहली बार आपके पीछे नमाज़ पढ़ने के बाद थकावट का नाम तथा निशान न रहा और ऐसा महसूस हो रहा था कि मानो अभी एक लम्बी नींद के बाद जागा हूँ।

बैअत करना एक इनाम है जिसकी क़दर हम सबको करनी चाहिए क्योंकि इस माहौल में एक हाथ पर जमा होना ही कामयाबी की कुंजी है।

वफ़द में शामिल एक और दोस्त Mr.Gani Gashi साहिब जो कि कोसोवो में मौजूद वाहिद अन्धों के स्कूल में उस्ताद हैं, उनको पहली बार जलसा में शामिल होने का अवसर मिला था। Humanity First के अधीन उनके स्कूल में एक प्रोग्राम आयोजित हुआ था जहां से जमाअत

अहमदिया का परिचय हुआ।

वह कहते हैं मैंने लोगों से जमाअत अहमदिया के जलसा के बारे में यही सुना था कि एक ख़ास ताक़त है जो सारे जलसा का प्रबन्ध चला रही होती है वर्ना इन्सान के बस की बात नहीं है। मैं ख़ुद तो देख नहीं सकता था इसलिए सोचा जलसा में शामिल होता हूँ।

वह वर्णन करते हैं कान ऐसा माध्यम है जो सच्ची बात को पहचान लेता है। हुज़ूर अनवर के ख़िताबों को सुनने के बाद ख़ाकसार ने यही महसूस किया है कि प्यारे हुज़ूर को मुहब्बत सिर्फ़ अहमदियों से ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लोगों से है। ख़ाकसार समझता है कि दुनिया को बचाने और सीधे मार्ग पर लाने वाली सिर्फ यही एक आवाज़ है।

कोसोवो के वफ़द में एक दोस्त Mr. Kushtrim Alhadaraj साहिब पिछली बार भी जलसा में शामिल हुए थे। उनका बेटा 4 साल का है और चल नहीं सकता था लेकिन किसी ने उनको परामर्श और ध्यान दिलाया कि हुज़ूर अनवर को दुआ का ख़त लिखें

यह कहते हैं कि अभी दुआ का ख़त लिखे हुए दो दिन ही गुज़रे थे कि बेटे ने अपने क़दमों पर चलना शुरू कर दिया और अल्हम्दुलिल्लाह अब वह चलता ही नहीं बल्कि भागता भी है। ख़लीफ़तुल मसीह ही हैं जो अपने लोगों से सच्ची मुहब्बत रखते हैं और उनके दर्द को अपना दर्द समझते हैं।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि कोसोवो में 95 प्रतिशत मुसलमान हैं। मुसलमानों की अधिक संख्या मौलवी से सम्बन्धित नहीं है बल्कि पीछे हटे हुए हैं तो वहां तब्लीग़ करने का सबसे उत्तम तरीक़ा क्या होगा।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया उनको चाहिए कि सबसे पहले ख़ुदा तआला की ज़ात पर ईमान लाएं। अख़बारों में आर्टीकल , निबन्ध लिखें कि ख़ुदा तआला का वजूद है। वह अपने बंदों से क्या चाहता है। तो सबसे पहले ख़ुदा के वजूद की तरफ़ लाएं। ख़ुदा का हक़ हम किस तरह अदा कर सकते हैं। फिर उस के बंदों के अधिकार हैं। अमन तथा सलामती के पैग़ाम पर ब्रोशर बांटें। ऐसे निबन्ध लिखें कि लोगों को मज़हब की तरफ़ ध्यान हो। लोगों का दुनियादारी की तरफ़ रुझान अधिक बढ़ गया है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि असल यह है कि ध्यान पैदा हो। जब ध्यान पैदा होगा तो तब्लीग़ के लिए फिर अगला क़दम शुरू होगा। इन देशों में मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या अब चाहती है कि अमन के लिए कोई चीज़ तलाश करें। इस के लिए बहरहाल हमें पैग़ाम देना पड़ेगा। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इन मुसलमान देशों में तब्लीग़ बड़ा चैलेंज है।

वफ़द में शामिल एक दोस्त Mr. Labinot Rexhad साहिब वहां एक हाई स्कूल के प्रिंसिपल हैं और पहली बार जलसा सालाना में शामिल हुए हैं। उन्होंने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: जलसा सालाना ने मुझ पर एक ख़ास भावनात्मक प्रभाव डाला है। जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला हाल में तशरीफ़ लाते तो नारों का बुलंद हो जाना और इसी तरह हुज़ूर का फ़रमाना कि बैठ जाएं। तो इतनी बड़ी भीड़ का फ़ौरन बैठ जाना , यह दुनिया में कहीं देखने को नहीं मिलता

हुज़ूर अनवर के ख़िताब हर किस्म के उलूम से सुसज्जित थे और इन्सान के ध्यान को खींचते थे। मेरा यह कहना है कि यह जलसा 3 दिन का नहीं बल्कि 30 दिनों का होना चाहिए। प्रबन्ध में कोई कमी देखने को नहीं मिली। अगले साल के जलसा में शामिल होने के लिए व्याकुल हूँ। मेरा इरादा बैअत करने का नहीं था लेकिन बैअत के दौरान तबीयत में ऐसा प्रभाव पैदा हुआ कि अपने आप ही हाथ उठ गया और शब्द दोहराने शुरू कर दिए।

कोसोवो के वफ़द में एक और दोस्त Mr Afrim Hoxha साहिब पहली बार अपनी फ़ैमिली के साथ जलसा में शामिल हुए और 5 लोगों की सारी फ़ैमिली को बैअत करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने वर्णन किया: पहले मुझे बैअत का एक डर था कि किस तरह होगी और जिस्म घबराहट से काँप रहा था लेकिन प्यारे हुज़ूर को देखने और बैअत करने के बाद तबीयत में सुकून सा महसूस होने लगा और जिस्म काँपना बंद हो गया।

कोसोवो के वफ़द में शामिल एक दोस्त Mr.Minator Nalokw साहिब वर्णन करते हैं अपने एहसासों और भावनाओं को शब्द में वर्णन करने में असमर्थ हूँ। ख़लीफ़तुल मसीह से मिलने के बाद ऐसा महसूस होता है कि जैसे ज़िन्दगी मुकम्मल और कामयाब हो गई है। मेरी ज़िन्दगी में कब से एक इच्छा थी कि कोई ऐसा वजूद मुझे मिले जो दुनिया की फ़िक्र करने वाला हो और जिससे मिलकर मेरे समस्त समस्याएँ और तकलीफ़ें हल हो जाएं। मेरा इस जलसा में शामिल होना ख़ुदाई इच्छा से था और बैअत करते समय मुझे ऐसा लग रहा था कि मानो में ख़ुदा के निकट हो गया हूँ।

कोसोवो के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 7 बजकर 12 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया और लोगों ने हाथ मिलाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया।

अफ़्रीक़ा के मुबल्लग़ीन ,मुअल्लमीन और जमाअत के लोगों से मुलाक़ात

इस के बाद अफ़्रीक़ा के देशों से आने वाले मुबल्लग़ीन, मुअल्लमीन और जमाअत के लोग ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने सब को सम्बोधित होते हुए फ़रमाया कि क्या आप अपने देशों में ऐसा जलसा करेंगे? जिस पर सब ने कहा कि हम इंशा अल्लाह कोशिश करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नाईजीरिया से आने वालों से पूछा कि आप को जलसा कैसा लगा? इस पर एक दोस्त ने निवेदन किया कि बहुत अच्छा प्रबन्ध था। बड़ा जलसा था और सारे काम बड़े उत्तम तरीके से तय पाए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि नाईजीरिया में बहुत अधिक तेल है। लेकिन वहां क्रप्शन है। एक अहमदी को अपना रोल अदा करना चाहिए और इस पर बहुत मेहनत करनी चाहिए।

एक दोस्त ने सवाल किया कि नौ मुबाईन को हम किस तरह निज़ाम का हिस्सा बनाएँ? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो आ रहे हैं वे सच्चे पैग़ाम की वजह से आए हैं। दुआओं से , इख़लास से, ईमान में मज़बूती से अपना नमूना क़ायम करें। उनकी अच्छी तर्बीयत करें और उनको ट्रेनिंग दें। इन नए आने वालों को एम टी ए से जोड़ें। कम से कम मेरे ख़ुत्बा जुम्अ: को सुनें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जलसा के आख़िरी दिन जो मेरा ख़िताब था वह सिर्फ़ जर्मनी जमाअत के लिए न था बल्कि सारी दुनिया के लिए था। उसको follow करें। मैंने Charter of Preaching दिया है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहिस्सालम का उस्वा हसना बताया है। इस को धारण करें और इस पर अनुकरण करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अपने देश के लीडरों को कहें कि देश की सेवा में ईमानदार हूँ और सय्यदुल-क़ौमे ख़ादेमुहुम बनें। लोगों की सेवा करें और देश की उन्नति के लिए काम करें और मेहनत करें।

एक साहिब ने वाक़फ़ीन नौ बच्चों के बारे में पूछा तो इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:अपने बच्चों को आरम्भिक शिक्षा सिखाएँ। उर्दू सिखाएँ और दूसरी ज़बानें सिखाएँ। हमें डाक्टरज़, टीचरज़ और वकीलों की ज़रूरत है। विभिन्न भाषाओं के माहरीन की ज़रूरत है।

नाईजीरिया से आने वाले एक दोस्त ने निवेदन किया कि जो हुकूमत के साथ खड़ा होता है इस पर बाग़ीयों की तरफ़ से दहश्तगर्द हमले होते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जो हुकूमत के ख़िलाफ़ खड़ा होता है उस का साथ तो नहीं देना। हिक्मत से काम लें। किसी भी फ़साद को रोकने के लिए हुकूमत से सहयोग करें। हुकूमत वाले आते हैं तो उनको जो भी अवस्था हो बता दें

एक दोस्त ने निवेदन किया कि बैंकों से क़र्ज़ लेकर लोग कर्ज़ों में दब जाते हैं।इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया बैंकों से क़र्ज़ ही क्यों लेते हैं? यह तरीक़ा ही ग़लत है। उसको avoid करना चाहिए। क़र्ज़ नहीं लेना चाहिए। क़र्ज़ लेकर ख़ुद ही फँसते चले जाते हैं

कांगो किंशासा से आने वाले एक साहिब ने निवेदन किया कि कांगो में बहुत सारे समस्याएँ थे। इलैक्शन था। फ़सादों का ख़तरा था। हुज़ूर अनवर की दुआओं से अमन रहा। सारा मसला बहुत अच्छी तरह तय पा गया। कोई परेशानी न हुई। महोदय ने वहां जमाअत की तरक़्क़ी के लिए दुआ का निवेदन किया।

अफ्रीकन लोगों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ ये मुलाक़ात8 बजकर 10 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने देश के हिसाब से तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया और हाथ मिलाने की सौभाग्य भी प्राप्त किया।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस में 16 फ़ैमिलीज़ के 60 मर्दों ने मुलाक़ात का सौभाग्य पाया और इसके इलावा सात लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। जर्मनी की कुछ जमाअतों के इलावा मुलाक़ात करने वालों का सम्बन्ध पाकिस्तान, बेनिन, घाना, सेरालियून, तन्ज़ानिया , आयरलैंड , गेम्बया , री यूनीयन आईलैंड, मलेशिया , साओतोमे और मारीशस से था।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम साढ़े नौ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए। दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाऐं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर की इजाज़त से आदरणीय सौग़ात अहमद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी ने 10 निकाहों का ऐलान किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस दौरान दया करते हुए तशरीफ़ फ़र्मा रहे और आख़िर पर दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश पर तशरीफ़ ले गए।

09 जुलाई 2019 ई(दिनांक मंगलवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह सवा चार बजे तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

फ्रंकफ़र्ट से लन्दन के लिए रवाना हुए

आज प्रोग्राम के अनुसार फ्रैंकफ़र्ट (जर्मनी से लंदन(बर्तानिया के लिए रवाना होने थी। फ्रैंकफ़र्ट क्षेत्र और इर्दगिर्द की जमाअतों से जमाअत के लोग मर्द तथा औरतें , बच्चे , बूढ़े बड़ी संख्या में अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही बैयतुस्सबूह के सेहन में जमा होने शुरू हो गए थे। कुछ प्रतिनिधि बड़ी दूर की जमाअतों से भी अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए पहुंचे। विभिन्न देशों से आने ने वाले प्रतिनिधि भी इस अवसर पर जमा थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ सुबह 10 बजकर 10 मिनट पर अपनी रिहायश गाह से बाहर पधारे, छोटे बच्चे और बच्चियां ग्रुपों की शक्ल में अलविदाई नज़्में पढ़ रहे थे। जमाअत के लोग दो लाइनों में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दया करते हुए जमाअत के लोग के मध्य लगभग 20 मिनट तक पधारे। हर छोटे बड़े ने प्यारे आक़ा का दर्शन किया। इस दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने विभिन्न लोगों से बातचीत फ़रमाई।

10 बजकर 30 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और सबको अस्सलामो अलैकुम कहा। इस के बाद क़ाफ़िला सफ़र पर रवाना हुआ। दोनों तरफ खड़े लोग मर्द तथा औरतें निरन्तर अपने हाथ ऊंचा करते हुए अपने प्यारे और महबूब आक़ा को अलविदा कह रहे थे।

फ्रैंकफ़र्ट (जर्मनी)से लंदन जाते हुए रास्ता में बेल्जियम के मिशन हाऊस बैयतुस्सलाम (बर्सल्ज़) मैं रुकने का प्रोग्राम था। फ्रांकफ़ुर्ट से बर्सल्ज़ तक की दूरी लगभग चार सौ किलोमीटर है। फ्रैंकफ़र्ट से ब्रसल्ज़ जाते हुए जर्मनी के शहर आखँ से आगे बेल्जियम देश की सीमाएं शुरू हो जाती हैं। यहां बॉर्डर से आगे और ब्रसल्ज़ में दाख़िल होने से पहले कुछ दूरी पर जमाअत बेल्जियम से क़ायमक़ाम अमीर साहिब बेल्जियम आदरणीय अनवर हुसैन साहिब, आदरणीय असौ मुजीब साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला जनरल सैक्रेटरी , आदरणीय तौसीफ़ अहमद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला तथा सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया बेल्जियम और ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम पर आधारित वफ़द हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के स्वागत के लिए मौजूद थे। यहां बिना रुके ही सफ़र जारी रहा और बेल्जियम से आने वाली गाड़ी ने क़ाफ़िला को lead किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की 2 बजकर 30 मिनट पर अहमदिया मिशन हाऊस बैयतुस्सलाम (ब्रसल्ज़)पधारे। स्थानीय जमाअत के लोग मर्द तथा औरतें और नैशनल आमिला के मैंम्बरों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़ा जोश के साथ स्वागत किया। हर कोई अपने प्यारे आक़ा का दर्शन कर के ख़ुशी से भरा था।

प्रिय अहमद गुलफ़ाम ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में फूल पेश किए जबकि एक अल्बानियन बच्ची दारीता अलसीवख़ी ने हज़रत बेगम साहिबा मद ज़िल्लाह तआला की सेवा में फूल पेश किए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मिशन हाऊस के रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 2 बजकर 55 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाऐं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। प्रोग्राम के अनुसार चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा से बाहर पधारे।

आदरणीय अमीर जमाअत अहमदिया जर्मनी अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब, मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी आदरणीय शौक़त अहमद साहिब, , नायब जनरल सैक्रेटरी आदरणीय जरी उल्लाह साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला, आदरणीय डाक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब, आदरणीय अब्दुल्लाह सपरा साहिब और आदरणीय सदर साहिब ख़ुद्दामुल अहमदिया ने अपने ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। जर्मनी से ये लोग हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए क़ाफ़िला के साथ आए थे। इसी तरह बेल्जियम के मुबल्लग़ीन आदरणीय मुहम्मद मज़हर साहिब, आदरणीय अर्सलान अहमद साहिब, आदरणीय हसीब अहमद साहिब, आदरणीय तौसीफ़ अहमद साहिब और आदरणीय मुजीब साहिब ने भी हाथ मिलाने का सौभाग्य पाया ।

इस अवसर पर सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान आदरणीय सलीक अहमद साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से हाथ मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। महोदय भी जर्मनी से क़ाफ़िला के साथ आने वाले वफ़द में शामिल थे। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ औरतों की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। जहां औरतों ने दर्शन का सौभाग्य पाया। सवा चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सामूहिक दुआ करवाई।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार यहां से फ्रांस की बंदरगाह Calais की तरफ़ रवानगी हुई और छः बज कर दस मिनट पर Channel Tunnel पर पधारे। जर्मनी से साथ आने वाले लोगों और ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को चैनल टनल तक छोड़ने और विदा करने और अलविदा कहने के लिए क़ाफ़िला के साथ ही रही। इसी तरह बेल्जियम से क़ाइम मक़ाम अमीर साहिब बेल्जियम , आदरणीय मुजीब साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला जनरल सैक्रेटरी, आदरणीय रफ़ीक़ हाश्मी साहिब नैशनल सैक्रेटरी रिश्ता नाता , राजा लतीफ़ अहमद साहिब नैशनल सैक्रेटरी जायदाद,आदरणीय शेख़ अनवर इक़बाल साहिब,आदरणीय शेख़ वसीम अहमद साहिब क़ाइद उमूमी अन्सारुल्लाह और सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया आदरणीय तौसीफ़ अहमद साहिब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को यहां से लंदन के लिए विदा करने के लिए क़ाफ़िला के साथ आए।

पासपोर्ट, इमीग्रेशन और अन्य दस्तावेज़ों की क्लीयरैंस के बाद 7 बजकर 10 मिनट पर क़ाफ़िला की गाड़ियां ट्रेन पर बोर्ड (board)हुईं और यह ट्रेन सात बज कर बीस मिनट पर Calais से बर्तानिया के तटीय शहर Dover की तरफ़ रवाना हुई। लगभग आधा घंटा के सफ़र के बाद ट्रेन चैनल टनल पार कर के Dover के लगभग बर्तानिया की ज़मीन में दाख़िल हुई और अपने विशेष स्टेशन पर रुकी। लगभग दस मिनट के रुकने के बाद फ्रांस के वक़्त के अनुसार 7 बजकर 50 मिनट और बर्तानिया वक़्त के अनुसार छः बज कर पच्चास मिनट पर क़ाफ़िला की गाड़ियां ट्रेन से बाहर आएं और मोटर वे पर सफ़र शुरू हुआ। (बर्तानिया का वक़्त फ्रांस के वक़्त से एक घंटा पीछे है)

आदरणीय मन्सूर अहमद शाह साहिब नायब अमीर जमाअत यू.के, आदरणीय

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 23 April 2020 Issue No.17

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अताउल-मुजीब राशिद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज यू.के, आदरणीय मिर्ज़ा नासिर इनाम साहिब प्रिंसिपल जामिआ अहमदिया यू.के, आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब ऐडीशनल वकीलुल माल लन्दन, आदरणीय अख़लाक अहमद अन्जुम साहिब (दफ़्तर वकालत तबशीर, लंदन आदरणीय अब्दुल क़ुद्दूस आरिफ़ साहिब सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया यू.के, आदरणीय मेजर महमूद अहमद साहिब अफ़्सर हिफ़ाज़त ख़ास सिक्योरिटी टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को स्वागत कहने के लिए मौजूद थे।

लगभग डेढ़ घंटा के सफ़र के बाद शाम 8 बजकर 20 मिनट पर मर्कज़ इस्लामाबाद में पधारे जहां जमाअत के लोग मर्द तथा औरतें की एक बड़ी संख्या ने अपने प्यारे आक़ा को अहलन व सहलन व मर्हबा कहते हुए स्वागत किया। क़सरे ख़िलाफ़त के एक हिस्सा को ख़ूबसूरत झंडियों से सजाया गया था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए अपना हाथ बुलंद कर के सब को अस्सलामो अलैकुम कहा और अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ में जिन ख़ुशनसीब लोगों को इस सफ़र पर जाने का सौभाग्य नसीब हुई उनके नाम रिकार्ड के लिए नीचे लिखे जाते हैं।

हज़रत सय्यदा अमतुस्सबूह साहिबा मद ज़िल्लाह आली (पत्नी सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़)

आदरणीय मन्सूर अहमद डाहरी साहिब,आदरणीय मुनीर अहमद जावेद साहिब (प्राइवेट सैक्रेटरी),आदरणीय आबिद वहीद ख़ान साहिब (इंचार्ज प्रैस ऐंड मीडिया ऑफ़िस लंदन),आदरणीय सय्यद मुहम्मद अहमद नासिर साहिब नायब अफ़्सर हिफ़ाज़त ख़ास लन्दन),आदरणीय नासिर अहमद सईद साहिब (हिफ़ाज़त विभाग आदरणीय सख़ावत अली बाजवा साहिब (हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय नसीरुद्दीन हुमायूँ साहिब (हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय ख़्वाजा अब्दुल क़ुद्दूस साहिब (हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय महमूद अहमद ख़ान साहिब(हिफ़ाज़त विभाग),आदरणीय ज़फ़र अता साहिब (हिफ़ाज़त विभाग),ख़ाकसार अब्दुल माजिद ताहिर (ऐडीशनल वकीलुल तबशीर लन्दन)

इस के अतिरिक्त आदरणीय नदीम अहमद अमीनी साहिब , आदरणीय नासिर अहमद अमीनी साहिब, आदरणीय डाक्टर जदरान साहिब और आदरणीय वसीई अहमद साहिब को क़ाफ़िला की गाड़ियां ड्राईव करने का सौभाग्य नसीब हुआ।

एम टी ए इंटरनैशनल (यू.के के निम्नलिखित मेंबरों ने इस दौरा का ख़ुत्बा जुम्अ:, वफ़ूद के साथ मीटिंगज़ , हुज़ूर अनवर के इंटरव्यू और अन्य प्रोग्रामों की रिकार्डिंग और जलसा सालाना के प्रोग्रामों की live ट्रांसमिशन के लिए इस दौरा में शामिल होने का सौभाग्य पाया।

(1) आदरणीय मुनीर अहमद ऊदा साहिब(2) आदरणीय सफ़ीरुद्दीन क़मर साहिब (3) आदरणीय अदनान ज़ाहिद साहिब (4)आदरणीय सय्यद वसीम साहिब (5) आदरणीय ज़की उल्लाह साहिब (6)आदरणीय अब्दुल हलीम साहिब मुरब्बी सिलसिला।

एम टी ए की टीम के इलावा विभाग मख़ज़ने तसावीर से आदरणीय ग़द्दीर अहमद साहिब ने भी इस दौरा में शामिल होने का सौभाग्य पाया। जर्मनी से डाक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब इस सफ़र के दौरान बतौर डाक्टर क़ाफ़िला के साथ रहे।

इन लोगों के इलावा जर्मनी से आदरणीय अब्दुल्लाह सपरा साहिब को भी इस सफ़र में क़ाफ़िला के साथ रहने का सौभाग्य नसीब हुई। अल्लाह तआला इन सब लोगों के लिए यह सौभाग्य मुबारक करे। आमीन।

(समाप्त.....)

☆ ☆
☆

पृष्ठ 1 का शेष

अर्थात ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए मिस्कीनों और अनाथों और कौदियों को खाना देते हैं और कहते हैं कि विशेष अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए हम देते हैं और इस दिन से डरते हैं जो निहायत ही भयावह है। क़िस्सा संक्षिप्त दुआ से ,तौबा से काम लो और सदक़े देते रहो ताकि अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल और करम के साथ तुम से मामला करे।

(मल्फ़ूज़ात , भाग 1 पृष्ठ 191 प्रकाशन 2018 कादियान)

☆ ☆
☆

कादियान दारुल अमान में सालाना इज्तिमाओ के आयोजन की तारीख़

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए भारत की ज़ेली तंज़ीमों (मज्लिस अन्सारुल्लाह,मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, लजना इमा उल्लाह के मुल्की सालाना इज्तिमों के लिए16-17-18 अक्तूबर 2020 ई(दिनांक जुम्अ: ,हफ़्ता, रविवार)की तारीख़ों की मंज़ूरी प्रदान फ़रमाई है

समस्त ज़ैली तन्ज़ीम के मैंबरों तथा मेम्बरात कादियान दारुल अमान के रुहानी माहौल में आयोजित होने वाले इन इज्तिमाओं में शामिल होने के लिए अभी से तैयारी शुरू कर दें। ये इज्तिमा तर्बीयत का प्रमुख माध्यम हैं। (सम्पादक)

M.Sc.Physics + B.Ed
टीचर की ज़रूरत है

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान के अधीन नज़ारत तालीम में एक आसामी को भरे जाने का उद्देश्य है। निम्नलिखित विस्तार के अनुसार इच्छु उम्मीदवारों की सूचना के लिए लिखित है कि

शर्तें

☆ उम्मीदवार की शौक्षिक योगय्ता UGC से मंज़ूर शूदा किसी भी यूनीवर्सिटी से M.Sc. Physics, B.Ed पच्चास फ़ीसदी नम्बरों के साथ होनी चाहिए ।

☆ किसी सीनीयर सैकण्डरी क्लास में कम से कम 2 साल तक फिज़िक्स पढ़ाने का अनुभव हो।

☆ उम्मीदवार की उम्र 22 से 37 साल के मध्य होनी चाहिए।

☆ उसी उम्मीदवार को इंटरव्यू के लिए बुलाया जाएगा जो मर्कज़ी कमेटी बराए भर्ती कारकुनान की तरफ़ से लिए जाने वाले लिखित परीक्षा में सफल होगा।

☆लिखित परीक्षा और इंटरव्यू में कामयाब उम्मीदवार को नूर हस्पताल कादियान का जारी किया गया मैडीकल Fitness सर्टीफ़िकेट भी पेश करना होगा।

☆ इंटरव्यू में सम्मिलित होने के लिए उम्मीदवार को कादियान आने जाने और मैडीकल के समस्त खर्च ख़ुद बर्दाश्त करने होंगे।

☆ स्लैक्शन की अवस्था में कादियान में रिहायश का प्रबन्ध ख़ुद करना होगा

☆ साप्ताहिक बदर में ऐलान के दो माह बाद परीक्षा की तारीख़ से सूचित कर दिया जाएगा।

☆ ऊपर वर्णित आसामी के लिए कवाइफ़ फ़ार्म नज़ारत दीवान से प्राप्त कर सकते हैं। दरख़ास्त फ़ार्म भरने करने के बाद तरीक़ा तथा नियमों के अनुसार कार्रवाई होगी

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad